Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org

انا مدينة العلم وعلى بابها

इमामिया मकातिब शिक्षाक्रम

# इमामिया दीनियात

कक्षा--४

प्रकाशित

तनज़ीमुल मकातिब
बिजनौर ज़ि० लखनऊ

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org

अना मदीनतुल-इल्मे व अलीयुन बा बोहा

इमामिया दीनियात शिक्षा क्रम

# इमामिया दीनियात

## कक्षा—४

प्रकाशक—

तनज़ीमे मकातिब-इमामिया

बिजनौर ज़िला लखनऊ

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org

# अध्यापक के लिये निर्देश

१—कठिन शब्दों का अर्थ लिखा कर याद कराया जाये और समझाया जाये।

२—पढ़ाने के पश्चात ऐसे प्रश्न किये जाये जिनके द्वारा बच्चा समझी हुई बात बता सके।

३—पाठ के नीचे लिखे हुये प्रश्नों के उत्तर लिखाकर कण्ठस्थ कराये जायें। जहां आवश्यक हो प्रयोगात्मक शिक्षा भीं दी जाये तथा आवश्यक कण्ठस्थ कराये जाये।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# पहला पाठ

## मजहब की आवश्यकता

पेड़ जंगल में भी उगते हैं बाग में भी लगाये जाते हैं परन्तु जंगल में जाते हुये मनुष्य डरता है और बाग में जाने को जी चाहता है। यह केवल इस लिये कि जंगल में किसी नियम के बिना पेड़ उगते हैं और बाग में नियम के साथ लगाये जाते हैं। जंगल में कोई माली पेड़ों की देख-रेख नहीं करता है और बाग में मालीं पेड़ों की देख भाल करता है।

यदि मनुष्यों को भी बिना नियम के जीने का अवसर दिया जाय तो मनुष्यों कीं आबादी भी जंगल जैसे बन जायेगी और मगर नियम के साथ लोग रहें तो मनुष्यों की बस्तियां स्वर्ग का नमूना बन जायेगी। अतः आवश्यकता है एक ऐसे नियम की जो मनुष्य को जीने का ढंग बताये और इसी नियम का नाम धर्म है। मनुष्यों के इसी बाग के माली नबी और इमाम होते हैं जिनको खुदा ने सदैव हमारी हिदायत (मार्ग दर्शन) के लिये भेजा है।

### प्रश्न

१ मनुष्यों को नियमों का पालन करके रहना क्यों आवश्यक है ?

२– मजहब किसे कहते हैं और उसका मकसद (ध्येय) क्या है।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org

# दूसरा पाठ

## क्या खुदा नहीं है ?

इस दुनियाँ में जहां बेगिनती धर्म वाले पाये जाते हैं वहां कुछ लोग लामजहब भी हैं यह लोग अपने को दहरिया (नास्तिक) कहते हैं। उनका खयाल यह है कि यह दुनिया (संसार) बिना किसी खुदा के एक दिन आप ही आप पैदा हो गई है और एक दिन आयेगा जब स्वयं ही मिट जायेगी।

इन लोगों के सामने दुनिया की कोई वस्तु ऐसी नहीं है जिसके लिये यह कहा जा सके कि यह स्वयं पैदा हो गई है। परन्तु केवल खुदा को न मानने के लिये यह कहने लगे हैं कि यह पूरी दुनिया बिना पैदा करने वाले के पैदा हो गई है।

हमारे छटे इमाम जाफ़रे सादिक अलैहिस्सलाम के पास एक "दहरिया" आया जिसका नाम "अब्दुल्लाहे दैसाही" था। उसने असहाब (साथियों) के सामने हजरत से खुदा के बारे में बात करना चाही आपने उससे पूछा "तेरा नाम क्या है ?' वह उत्तर दिये बिना चला गया। असहाब ने आश्चर्य से पूछा "यह क्यों चला गया यह तो आप से बहस करने आया था। आपने फरमाया "बहस समाप्त हो गई और वह अपनी बहस में हार गया इस लिये शर्मिन्दह (लज्जित) होकर चला गया।

असहाब ने कहा "मौला ! उसने तो कोई बात ही नहीं की। फिर बहस कैसे समाप्त होगई।"

आपने फरमाया "मैंने उसका नाम पूछ लिया। वह समझ गया कि नाम बताने पर मैं उससे तुरन्त पूछूँगा कि अगर अल्लाह नहीं है तो फ़िर तू "अब्दुल्लाह" कैसे है ? अब्दुल्लाह का अर्थ है 'अल्लाह का बन्दह' जब अल्लाह हो नहीं तो बन्दह कहां से आ गया।

हजरत यह समझाना चाहते थे कि खुदा के बिना बन्दह नहीं हो सकता और जब बन्दे मौजूद है तो इसका अर्थ यह है कि उनका पैदा करने वाला खुदा भी मौजूद है।

प्रश्न

१—क्या नास्तिकों के सामने कोई ऐसी वस्तु है जो स्वयं बन गई हो ?

२—नास्तिक बहस में कैसे हारा ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# तीसरा पाठ

## अगर दो खुदा होते

हमने दुनिया में यह तजरुबा (अनुभव) किया है कि जब किसी काम को दो आदमी मिलकर करते हैं तो उनमें आपस में कभी मेलजोल रहता है कभी इख्तेलाफ (मतभेद) हो जाता है।

मेलजोल की अवस्था में दोनों एक दूसरे की राय के पाबन्द और एक दूसरे के मशविरह (परामर्श) के रहते हैं और मतभेद की अवस्था में कोई काम पूरा नहीं हो पाता। यही हाल दो खुदाओं का है। अगर दो खुदा होते तो या उनमें एकता होती या मतभेद। अगर दोनों में एकता होती तो एक दूसरे पर आश्रित और उसकी राय के पाबन्द होते मुहताजी और पाबन्दी केवल बंदों में पाई जा सकती है खुदा में नही पाई जा सकती। खुदा न कभी किसी का मुहताज हो सकता है न पाबन्द। वरन्, वह खुदा न रहेगा और अगर दोनों में मतभेद हो गया। एक ने कहा वर्षा होना चाहिये, दूसरे ने कहा नहीं होना चाहिये तो इस झगड़े में दुनिया का काम बिगड़ जायेगा। क्यों कि दोनों की बात तो चल नहीं सकती। एक ही की चलेगी। जिसकी बात चलेगी वह ताकतवर (बलवान) होगा और जिसकी बात न चलेगी वह कमजोर (निर्बल) होगा। जो बली होगा उसी की खुदाई बाकी रहेगी और जो कमजोर होगा उसकी खुदाई का अन्त हो जायेगा।

इसीलिये हमको मानना पड़ता है कि खुदा एक है।

प्रश्न

१—दो खुदा होते तो क्या होता ?

२—खुदा को एक क्यों मानना पड़ता है ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# चौथा पाठ

## गैब पर ईमान

इस्लाम की सबसे बड़ी अच्छाई यह है कि उसने जहाँ मनुष्यों को आंखों से काम लेना सिखाया है वहाँ अक्ल (बुद्धि) से भी काम लेने का आदेश दिया है। आँख का काम उन वस्तुओं का देखना है जो सामने है और बुद्धि का काम उन वस्तुओं का देखना है जो गायब (गुप्त) है और आँखों से देखी नहीं जा सकती है।

दुनिया में बहुत सी चीजें आँख से देखने के बाद मानी जाती हैं। जैसे सूर्य, चंद्र, तारे, पर्वत, समुद्र आदि और कुछ चीजें ऐसी हैं जो आज तक किसी को दिखाई नहीं दी है परन्तु लोग उनको बिना देखे मानते हैं जैसे करन्ट, रूह (आत्मा), अक्ल (बुद्धि) आदि। हमने बिजली के तार देखे हैं परन्तु उस पर दौड़ती हुई बिजली नहीं देखी। आत्मा के कारण हम सब जीवित हैं। परन्तु आत्मा को किसी ने देखा नहीं। बुद्धि से सब काम लेते हैं परन्तु बुद्धि आज तक किसी को दिखाई नहीं दी।

इसी प्रकार धर्म ने भी कुछ चीजें बताई हैं जिनका मानना और उनके होने पर ईमान रखना हर मुसलमान के लिये अनिवार्य है। क्योंकि यह बातें खुदा और रसूल की बताई हुई हैं जो सच्चे थे और उनकी बताई हुई कोई बात कभी गलत नहीं हो सकती है।

जिन, फरिश्ते, हूर, ग़िलमान, जन्नत दोज़ख़, कौसर आदि बहुत सी चीजें ऐसी हैं जिनको खुदा ने पैदा किया है परन्तु वह दिखाई नहीं देती हैं। परन्तु हम मुसलमान उनके वुजुद (अस्तित्व) को मानते हैं क्योंकि रसूल ने बताया है कि यह चीजें हैं।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



गैब पर ईमान लाना ही असली इस्लाम है। जो मनुष्य गैब पर ईमान नहीं रखता वह मुसलमान नहीं है। इस्लाम खुदा को मानने से प्रारम्भ हुआ है जो ग़ायब (गुप्त) है और कयामत उसूलेदीन की अन्तिम बात है जो ग़ायब है।

बारहवें इमाम ग़ायब हैं। खुदा के आदेशानुसार मनुष्यों की दृष्टि से छुपे हैं। आपकी ग़ैबत पर ईमान रखना और आपके वुजूद का मानना इस्लाम का एक ऐसा अंग है जिसके बिना इस्लाम मुकम्मल नहीं हो सकता।

प्रश्न

१—फूल, आम, सेब, रूह (आतमा), अक्ल (बुद्धि), बिजली इन चीजों में कौन-कौन आँख से देखी जाती है और कौन-कौन बुद्धि से।

२—कुरआन और बरज़ख में से आँख से देखकर किस पर ईमान होता है और बुद्धि से देख कर किस पर ?

३—जिसका ईमान गैब पर नहीं उसको मुसलमान कहेंगे या नहीं ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# पाचवाँ पाठ

## तवक्कुल

तवक्कुल का अर्थ है भरोसा करना। मनुष्य को चाहिये कि हर स्थिति में अल्लाह पर भरोसा करे। सारी नेमतें छिन जायें तो भी मायूस (निराश) नहीं होना चाहिये और सारा संसार विरोधी हो जाये तो भी डरना नहीं चाहिये। जो खुदा पर भरोसा करता है खुदा उसे हर नेमत देता है. और जो खुदा से डरता है वह और किसी से नहीं डरता इसलिये कि उसको विश्वास होता है कि हर लाभ और हानि खुदा के हाथ में है। जिसे खुदा बचाये उसे कोई मिटा नहीं सकता और जिसे खुदा मिटाये उसे कोई बचा नहीं सकता और इसी प्रकार खुदा जिसे न दे उसे कोई कुछ दे नहीं सकता और खुदा जिसे मालामाल (धनवान) कर दे उससे कोई कुछ छीन नहीं सकता।

जो खुदा से नहीं डरता वह संसार की हर चीज से डरता है। जो खुदा से डरता है वह मौत से भी नहीं डरता खुदा से न डरने वाला डरपोक होता है जो केवल खुदा से उम्मीद (आशा) रखता है वह बन्दों के आगे हाथ नहीं फैलाता। बन्दों की खुशामद नहीं करता बल्कि अपने खुदा के सामने गिड़गिड़ाता है। निराशाओं में भी निराश नहीं होता ऐसे मनुष्य को खुदा, बन्दों के सामने अपमानित नहीं करता।

जनाबे इबराहीम अलैहिस्सलाम को जब नमरुद और उसकी कौम ने लाखों मन आग में डाला था तो आग के शोलों में जाते हुए आप नहीं डरे क्योंकि आप केवल खुदा से डरते थे। शोलों में जाने के पश्चात् भी जनाब इबराहीम निराश नहीं हुए क्योंकि आप केवल खुदा से उम्मीद आशा) रखते थे। अल्लाह ने भी आग को ठन्डा करके जनाब इबरा-

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



हीम को बचा लिया। अतः हमको भी कभी निराश नहीं होना चाहिये और हमारे हृदय से कभी खुदा का खौफ (भय) नहीं निकलना चाहिये। हमको खुदा से इस प्रकार नहीं डरना चाहिये जिस प्रकार हम जालिम या दरिन्दे से डरते हैं क्योंकि इसमें केवल डर ही डर होता है उम्मीद (आशा) की कोई झलक नहीं होती। बल्कि इस प्रकार डरना चाहिये जिस प्रकार हम माता पिता या अपने गुरु से डरते हैं जहाँ भय के साथ आशा और सहारा भी होता है।

प्रश्न

१—तवक्कुल का क्या अर्थ है?

२—अल्लाह ने जनाब इबराहीम को आग से क्यों बचाया?

३—अल्लाह से किस प्रकार डरना चाहिये?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# छठा पाठ

## अद्ल

अद्ल का अर्थ यह है कि सदा हर बुराई (अवगुण) से पाक है। उसमें हर कमाल (गुण) पाया जाता है। न वह कोई बुरा काम कर सकता है और न किसी ऐसे काम के करने से रुक सकता है जिसका करना आवश्यक हो। अतः खुदा न तो जुल्म (अन्याय) कर सकता है और न ज़ालिम (अन्यायी) को सजा देने से रुक सकता है।

खुदा के हर बुराई से पवित्र होने की दलील (सूत्र) यह है कि कोई भी बुरा कार्य कोई मनुष्य तब कर सकता है जब उसे उसकी बुराई ज्ञात नहीं या बुराई जानता हो परन्तु किसी लाभ के लिये जान बूझ कर बुराई करे। खुदा में यह दोनों बातें नहीं पायी जाती। वह आलिम (ज्ञानी) है अतः हर बुराई को जानता है और ज्ञानी है अतः उसको किसी वस्तु की आवश्यकता या लालच नहीं है इसलिये वह बुराई नहीं कर सकता।

दूसरी दलील (सुत्र) खुदा के आदिल होने की यह है कि उसने बन्दों को हुक्म (आज्ञा) दिया है कि अन्याय न करें कुरआने मजीद में भी यह हुक्म (आदेश) बार-बार आया है और एक लाख चौबीस हजार नबियों ने भी उसका यह हुक्म बयान किया है अतः जुल्म (अन्याय) न करने की आज्ञा देकर वह स्वयं कैसे जुल्म कर सकता है।

तीसरी दलील खुदा के आदिल होने की यह है कि खुदा ने कहा है कि बुरे काम करने वालों को दोजख (नरक) में डालूँगा और अच्छे काम करने वालों को जन्नत (बैकुन्ठ) दूँगा। मनुष्य जन्नत की लालच और दोजख के भय के कारण अच्छे काम करते हैं और बुरे कार्यों को छोड़

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



देते हैं क्योंकि उनको खुदा कि बात पर भरोसा है। परन्तु अगर खुदा आदिल नहीं वरन जालिम हो तो हम सोच सकते हैं कि संभव है हम अच्छे कार्य करें फिर भी खुदा दोजख में डाल दे। यह सोचने के पश्चात न खुदा पर भरोसा रहेगा, न कोई मनुष्य बुरा कार्य करने से रुकेगा और न कोई अच्छा कार्य करेगा। इस प्रकार दुनिया बुराई से भर जायेगीं।

खुदा को आदिल (न्यायी) मानना हम सब के लिये आवश्यक है।

प्रश्न

१—खुदा के आदिल होने का क्या अर्थ है ?

२—खुदा के आदिल होने की कोई एक दलील (सूत्र) दो।

३—खुदा आदिल न रहे तो दुनिया बुराइयों से क्यो भर जायेगी ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# सातवाँ पाठ

## नुबुवत

इस संसार में मनुष्य भी पैदा होता है और पशु पक्षी भी। जिन्दगी (जीवन) भर दोनों खाते पीते और रहते हैं फिर एक दिन दोनों ही को मौत (मृत्यु) आ जाती है। इन बातों में हर मनुष्य और हर जानवर एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। परन्तु दोनों में अन्तर यह है कि जानवर से उसके अच्छे और बुरे कामों का हिसाब न लिया जायेगा और अच्छे या बुरे कार्यों के कारण उसे जन्नत या दोजख में न भेजा जायेगा परन्तु मनुष्य मरने के पश्चात फिर जिन्दह होकर अपने खुदा की बारगाह में हाजिर (प्रस्तुत) होगा। जिससे खुदा प्रसन्न होगा उसको जन्नत की अच्छी नेमतें (सुखसामग्री) मिलेगी और जिससे खुदा नाराज (अप्रसन्न) होगा उसको दोजख में डाल दिया जायेगा। जानवर की जिन्दगी (जीवन) में यह जानने की आवश्यकता नहीं है कि खुदा किन बातों से प्रसन्न होता है और किन बातों से अप्रसन्न होता है। परन्तु मनुष्य के लिये आवश्यक है कि वह उन बातों को भी जाने जिससे खुदा प्रसन्न होता है और उन बातों को भी ज्ञात करे जिनसे खुदा अप्रसन्न होता है।

खुदा बन्दो पर मोहरबान (दयालु) है इसलिये यह बातें बताने के लिये उसने एक लाख चौबीस हजार नबी भेजे। जिनमें तीन सौ तेरह बड़े नबी थे। बड़े नबी को रसूल कहते हैं। तीन सौ तेरह रसूलों में पाँच बड़े रसूल थे जिनको ऊलुलअज्म कहते हैं। इन पाँचों में सबसे बड़े हमारे रसूल हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम थे जो खुदा के अन्तिम नबी थे। आप के पश्चात न कोई नबी आया है न आयेगा। जिन लोगों ने आप के बाद नबी होने का अदवा

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



किया है वह सब झूठे हैं। जैसे मुसैलमः कज्जाब, सुजाह, और मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी आदि।

जिन नबियों के नाम किताबों में मिलते हैं उनमें प्रसिद्ध यह हैं।

(१) हजरत आदम (२) हजरत नूह (३ हज़रत इदरीस (४) हजरत इबराहिम (५) हजरत इस्माइल (६) हजरत इसहाक (७) हजरत याकूब (८) हजरत युसुफ (९) हजरत युनुस (१०) हजरत लूत (११) हजरत सालेह (१२) हजरत हूद (१३) हजरत शुऐब (१४) हजरत शीश (१५) हजरत दाऊद (१६) हजरत सुलैमान (१७) हजरत जुल्किफ्ल (१८) हजरत अलयसा (१९) हजरत इलयास (२०) हजरत जकरया (२१) हजरत यहया (२२) हजरत मूसा (२३) हजरत हारुन (२४) हजरत युशा (२५) हजरत ईसा (२६) हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्ललाहो अलैहे व आलेही वसल्लम।

पांच ऊललअज्म रसूल जिनको खुदा ने साहेबे शरीअत बनाया था। वह जनाब इबराहिम, जनाब मूसा जनाब ईसा और जनाब रसूल खुदा सल्ललाहो अलैहे व आलेही व सल्लम हैं।

हमारे रसूल के आने के पश्चात पिछली शरीअते खुदा ने समाप्त कर दी है। अब कयामत (प्रलय) तक केवल आप की शरीअत बाकी रहेगी और केवल इस मनुष्य को नजात (मुक्ति) होगी जो आपकी शरीअत का मानने वाला होगा।

प्रश्न

१—मनुष्यों और पशुओं में क्या अन्तर है ?

२—मनुष्यों को खुदा की प्रसन्नता और अप्रसन्नता कैसे ज्ञात होती है ?

३—दो झूटे नबियों के नाम बताओ ?

४—दस सच्चे नबियों के नाम बताओ ?

५—अब किस की शरीअत बाकी है और कयामत तक किसकी शरीअत चलेगी ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# आठवाँ पाठ

## नबी के गुण

तुम जानते हो कि प्रत्येक नबी में कुछ बातों का पाया जाना आवश्यक है।

(१) नबी आलिम (ज्ञानी) पैदा होता है उसके माता पिता, दादा दादी आदि सब पूर्वज मुसलमान होते हैं। नबी किसी काफिर कि नस्ल (वंश) में नहीं पैदा होता बल्कि सदैव पवित्र और पाक नस्ल में पैदा होता है। नबी सदैव शरीफ (सज्जन) और सम्मलित घराने में पैदा होता है। नबी में कोई काबिले नफरत (घृणात्मक) रोग नहीं होता नबी कोई ऐसा कार्य या पेशा (करोबार) नहीं करता जो अपमान का कारण हो।

(२) हर नबी मासूम होता है। उससे न कोई गुनाह (अपराध) होता है न कोई बुराई। न भूल चूक होती है और न खता (दोष) और गल्ती (त्रुटि)। नबी चूँकि आलिम पैदा होता है इसलिये हर गुनाह से घृणा करता है और हर बुराई से घृणित रहता है। इसी घृणा के कारण वह कभी अपराध नहीं करता यह समझना गलत है (अनुचित) है कि मासूम बुराई न करे और नेक काम करने पर मजबूर (बाध्य) होता है। बात यह है कि वह अपने ज्ञान के कारग अपने इरादे (संकल्प) और इख्ति-यार (अधिकार) से गुनाहों से बचता है और नेकियाँ करता है।

(३) नवी जितने लोगों की हिदायत (मार्गदर्शन) के लिये आता है उन सब लोगों से हर गुण और अच्छाई में आगे होता है। नबी के जमाने (काल) का कोई मनुष्य किसी अच्छाई में नबी से आगे नहीं हो सकता।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



(४) कोई नबी स्वयं नबी नही बनता है बल्कि खुदा उसको नबूवत देता है।

प्रश्न

१—क्या नबी के पूर्वजों में कोई काफिर हो सकता है ?

२—क्या मासूम अच्छे काम के करने और बुरे काम न करने पर बाध्य होता है ?

३—नबी किन लोगों से अफजल होता है।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# नवाँ पाठ

## नबी की पहचान

खुदा ने किस को नबी बना कर भेजा है। यह बात हमको दो प्रकार से ज्ञात होती है। (१) जो नबी मौजूद है वह बाद में आने वाले नबी का नाम पता और निशान (चिन्ह) बता कर जाये जैसे ईसा अलैहिस्सलाम हमारे नबी के आने की खबर (सूचना) दे गये थे और आपने पेशीनगोई (भविष्यवाणी) की थी कि मेरे बाद एक नबी आयेगा जो अन्तिम नबी होगा और उसका नाम अहमद होगा। हमारे नबी के आने की खबर हजरत मूसा ने भी दी थी आप ने बताया था कि यसरब के नसर में अन्तिम नबीं आयेगा। इसी कारण यहूदी हमारे नबी के आने से पहले ही यसरब नगर में आकर आबाद हो गये थे। यसरब मदीनाए मुनव्वरह का दूसरा नाम है। यहूदी और ईसाई जनाब मूसा और जनाब ईसा से खबर (सूचना) सुन कर अन्तिम नबी का इंतिजार (प्रतीक्षा) कर रहे थे परन्तु उन सबका सबसे बड़ा अभागापन यह था कि जब नबी आये जिनका इन्तिजार था तो इमान लाने के बजाये आपके शत्रु और कठोर विरोधी हो गये।

(२) नबी के पहचानने का दूसरा तरीका मोजिजह है। मोजिजह खुदा की दी हुई वह ताकत है जिसके द्वारा नबी ऐसे आश्चर्य जनक काम कर दिखाता है जिसका उत्तर लाने में उस समय के लोग असमर्थ हो जाते हैं। इस प्रकार जमाने (काल] के लोगों को यकीन [विश्वास] हो जाता है कि मोजिजह दिखाने वाला खुदा का भेजा हुआ नबी है। इसी कारण हर नबी अपनी नबूव्वत के दावे के सबूत में मोजिजह दिखाता है। जैसे जनाब मूसा अलैहिस्स-लाम का असा [डंडा] जिसने अजदहा बनकर जादूगरों की उन सब

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



रस्सियों को निगल लिया था जो जादूगरों के कर्तब के कारण रेंगते हुई साँप जान पड़ती थी। जनाब ईसा अलैहिस्सलाम मुर्दों को जिन्दह् और बीमारों को बिना दवा के अच्छा कर देते थे। हमारे नबी हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्ललाहो आलैही वसल्लम ने भी बहुत से मोजिजे दिखाये है। आपने उंगली के इशारे से चाँद के दो टुकड़े कर दिये थे। एक बार अपनी उंगलियों से पानी का चश्मा फूट निकला था। पत्थर और जानवर आपकी आज्ञा से मनुष्य की तरह आपकी नुबूव्वत और रिसालत की गवाही देते थे। दरख्त आपकी आज्ञा से चलकर आपके पास आ जाते थे। कुराने मजीद हमारे नबी का सबसे बड़ा और कयामत तक बाकी रहने वाला मोजिजह है जिसमें तमाम मनुष्यों और जीवों को चैलेंज किया गया है कि अगर मुमकिन [सम्भव] हो तो तुम सब मिलकर इसका जवाब लाओ परन्तु आज तक जवाब नहीं आ सका जो कुरआने मजीद में मोजिजह होने की सबसे बड़ी दलील [सूत्र] है।

प्रश्न

१—नबी की पहचान के दो तरीके क्या हैं ?

२—नबी को खुदा मोजिजह क्यों देता है ?

३—पांच मोजिजे बताओ ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# दसवां पाठ

## हमारे अन्तिम नबी

हमारे नबी १७ रबिउल अव्वल सन १ आमुलफ़लि को जुमा के दिन सुबहे सादिक के करीब मक्का मुअज्जमा में पैदा हुए। नबीये करीम की माता जनाब आमिना खातून है। आपके नाना साहब हैं जो मदीने के बहुत बाइज्जत [सम्मानित] मनुष्य थे। नबिये करीम के पैदा होने के पूर्व ही आपके पिता जनाबे अब्दुल्लाह का देहान्त हो गया था। जनाब अबूतालिब आहजरत के चचा थे। आप की विलादत [जन्म] के समय पृथ्वी से आकाश तक एक नूर [प्रकाश] चमक रहा था। फरिश्ते आकाश से बड़ी तादाद [गिनती] में पृथ्वी पर उतर रहे थे। शैतान ने घबरा कर मलाएका से पूछा क्या कयामत आ गई। मलाएका ने बताया कि अंतिम नबी हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लालहो अलैहे व आलेही वसल्लम पैदा हुए हैं। हम आसमानों से मुबारकबाद [बधाई] के लिये आ रहे हैं। शैतान यह सुनकर उसी समय से नबीये करीम और उनको आलेपाक [पवित्र सन्तान] का शत्रु हो गया।

आप जब चार वर्ष के थे तो आपकी माता जनाब आमिना खातून का 'अबवा' नामक स्थान पर देहान्त्त हो गया। आप आठ वर्ष के थे जब आपके शफीक 'दयालु' दादा जनाब अब्दुल मुत्तलिब का अन्तकाल [देहान्त] हो गया। दादा के देहान्त के पश्चात् आप की परवरिश [पालन पोषण] आपके सगे और मेहरबान 'दयालू' चचा जनाब अबूतालिब ने की। जनाब अबूतालिब मरते समय तक आप के हामी [समर्थक] व मद-दगार, [सहायक] और नासिर (सहायक) व मुहाफिज (रक्षक) रहे। आपकी चाची जनाब फातिमा बिन्ते असद [असद की पुत्री] हजरत अली

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



अलैहिस्सलाम की माता हैं। उन्होंने माँ की तरह आपको पाला। आप भी उनको मां कहते थे। जब आप का सिन [आयु] पच्चीस वर्ष का था तो आपकी शादी अरब की मशहूर [प्रसिद्ध] खातून जनाबे खदीजा से हुई। जनाबे खदीजा ने अपना सारा धन इस्लाम की तबलीग [प्रचार] पर खर्च कर दी। जनाबे खदीजा के देहांत के पश्चात् नबीये करीम ने बहुत सी शादिया की। परन्तु आप अपने देहान्त तक हजरत खदीजा को ही याद करते रहे। जब आपको सिन [आयु] चालीस वर्ष का हुआ तो २७ रजब को खुदा ने आप को नुबूव्वत के एलान का आदेश दिया। तीन साल आपने पोशीदह [गुप्त] तबलीग (प्रचार) की उसके पश्चात खुल कर तबलीग करने का आदेश आया। जब आपकी आयु ५१ वर्ष थी और इस्लाम के एलान [ घोषणा ] को ११ वर्ष हो चुके थे तो चन्द [कुछ] महीनों के फासले दूरी से जनाब अबुतालिब और जनाबे खदीजा का देहान्त हो गया। आप इन दोनों के देहान्त पर बहुत रन्जीदह [दुखी] हुये और उस साल का नाम "आमुलहड़न" (शोक का वर्ष) रख दिया। जब आपकी आयु ५३ वर्ष की थी तो मक्के में १३ वर्ष दीन की तबलीग प्रचार करने और सख्ततरीन मसाएब [कठोर] झेलकर मदीना की ओर हिजरत प्रस्थान की। हिजरत की रात शत्रुओं ने आप का घर घेर लिया था। आप अल्लाह की आज्ञा से घर से बाहर निकले तो शत्रु अंधे हो गये। आपको जाते हुए न देख सके। आपने हजरत अली अलैहिस्सलाम को अपने बिस्तर पर सुला दिया। शत्रु भरा बिस्तर देखकर रात भर यही समझते रहे की नबी आराम कर रहे हैं। और हजरत अली अलैहिस्सलाम शत्रुओं की खिची हुई तलवार के साये में रात भर बड़े इतमीनान [संतोष] से आराम फरमाते रहे।।

आहजरत दस साल मदीनाए मुनव्वरह में रहे ६३ वर्ष की आयु में इन्तेकाल (देहान्त) फरमाया।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



आप ने जिस वर्ष मक्के से मदीने की ओर हिजरत [प्रस्थान] की है उसी साल से यह सन् हिजरी शुरू हुआ है। हिजरत के दूसरे साल आपने-अपनी पुत्री इस्लाम की शहजादी जनाब फातिमा ज़हरा अलैहिस्सलाम का विवाह दीन व दुनिया के मौला हज़रत अली अलैहिस्सलाम से किया। सन दस हिजरी में आप ने आखरी हज किया और हज की वापसी पर १८ (अन्तिम) जिलहिज्जह को गदीरेखुम नामक स्थान पर सवा लाख हाजियो के सामने दिन दोपहर खुले मैदान में हजरत अली अलैहिस्सलाम को अल्लाह के आदेशानुसार अपना खलीफा और जानशीन बनाया और तमाम मुसलमानों का हाकिम करार दिया। मदीना वापस आकर आप दो महीने दस दिन जिन्दह [जीवित] रहे और कुछ दिन बीमार रह कर २८ सफर सन ११ हिजरी को इन्तेकाल [देहान्त] फरमा गये। हजरत अली अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के आखिरी [अन्तिम] रसूल को गुस्ल व कफन दिया और रिसालत के आफताब [सूर्य] को कब्र [समाधि] के मगरिब [पश्चिम] में छुपा दिया।

प्रश्न

१—रसूलुल्लाह की विलादत [जन्म] और वफात [देहान्त] की तारीख [तिथी] और आप की आयु बताओ ?

२—बचपन में आहजरत की परवरिश [पालन पोषण] किस किसने की ?

३—आप की माँ और चची के क्या नाम थे ?

४—बेअसत और हिजरत के समय आपकी क्या आयु थी ?

५—आमुलहुज़्न [शोक का वर्ष] कौन सा साल है और क्यों ?

६—जनाब फातिमा ज़हरा का विवाह कब और किससे हुआ और उनकी औलाद [सन्तान] के नाम क्या-क्या हैं ?

७—हजरत अली अलैहिस्सलाम को कब और कहां खलीफा बनाया गया ?

८—रसूलुल्लाह को किस ने दफन किया ?

९—अब कौन हिजरी सन है और रसूल की हिजरत को कितना समय हुआ ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# ग्यारहवाँ पाठ

## इस्मत

हम जाहिल पैदा होते हैं और दुनिया की हर चीज से बेखबर होते हैं। फिर धीरे-धीरे इल्म (ज्ञान) हासिल करते हैं। जितना हमारा इल्म [ज्ञान] बढ़ता है उतनी ही हमारी जिहालत [अज्ञानता] कम होती है परन्तु हमारा ज्ञान कम ही होता है। हम में से बड़े से बड़ा ज्ञानी का ज्ञान भी अपूर्ण होता है। हम जानकर फिर भूल जाते हैं और भूले से गलती कर बैठते हैं। इसके अतिरिक्त हम जान बूझकर भी गलतियाँ और गुनाह [अपराध] करते हैं। अल्लाह ने इन कमजोरियों से बचाने के लिये और हमारी हिदायत [मार्ग दर्शन] के लिये नबी और इमाम भेजे।

नबी और इमाम का इन तमाम कमजोरियों से पवित्र होना आवश्यक है वरन् हमारी हिदायत न कर सकेंगे बल्कि आवश्यकता होगी कि भूल चूक और गल्ती के अवसर पर कोई उनकी हिदायत करे। नबी और इमाम को 'मासूम' बनाने के लिये खुदा उनको अपनी एक मखसूस [विशिष्ट] मेहरबानी द्वारा ऐसा ज्ञानी और पवित्र बना देता है कि उसके बाद वे न कभी किसी गल्ती [त्रुटि] का इरादा करते हैं और न उन से कोई अपराध हो सकता है। इस मखसूस मेहरबानी का नाम इसमत है और खुदा जिस पर अपनी यह मखसूस मेहरबानी करता है वह मासूम होता है।

चूँकि इस्मत एक पोशीदा (गुप्त) मेहरबानी है जो खुदा अपने मखसूस बन्दों को अता (देना) करता है अतः ख़ुदा के बताये बिना किसी के मासूम होने का ज्ञान हमें नहीं हो सकता। नबी करीम बारह इमाम और जनाबे फातिमा के लिए अल्लाह ने बताया है कि यह मासूम हैं।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



नबी या इमाम को केवल खुदा ही मुकर्रर (नियुक्त) कर सकता है क्यों कि उनका मासूम होना अनिवार्य है इसका ज्ञान खुदा के अतिरिक्त किसी को नहीं है। अतः हर नबी या इमाम वही होता है जिसे खुदा नियुक्त करता है और जिसके मासूम होने की सूचना उसने दी है।

प्रश्न

१—इमाम की इस्मत का अर्थ बताओ ?

२—इस्मत का ज्ञान कैसे होता है ?

३—क्या इस्मत के बाद मनुष्य मजबूर हो जाता है ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# बारहवाँ पाठ

## चौदह मासूम

(१) हमारे रसूल–आपके पिता जनाब अब्दुल्लाह दादा जनाब अब्दुल मुत्तलिब और माता जनाब आमिना खातून थीं। आप मक्कए मुअज्जमा में पैदा हुए और मदीनए तय्येबा में इन्तेकाल फरमाया।

(२) जनाबे फातिमा के पिता हमारे रसूल और माता जनाब खदीजा थीं। आप का विवाह हजरत अली से हुआ। मक्के में पैदा हुई और मदीने में शहादत पायी।

(३) हजरत अली के पिता जनाब अबूतालिब दादा जनाब अब्दुल-मुत्तलिब और माता जनाब फातिमा बिन्ते असद थी। आप खानए काबा में पैदा हुए और मस्जिदे कूफ़ा में शहीद हुए।

(४) इमाम हसन के वालिद [पिता] हजरत अली और वालिदा [माता] जनाब फातिमा हैं। मदीने ही में पैदा हुये और मदीने में ही शहीद हुए।

(५) इमाम हुसैन के पिता हजरत अली और माता जनाब फातिमा थी मदीने में पैदा हुए और करबला में शहीद हुए।

(६) इमाम जैनुल आबेदीन का नाम अली था। आप इमामे हुसैन के बड़े फरजन्द [पुत्र] थे। जनाब शहरबानो आप की माँ थीं। मदीने ही में पैदा हुये और मदीने ही में शहीद हुए।

(७) इमाम मुहम्मद बाकर का नाम मुहम्मद था। इमाम जैनुल्आबेदीन आप के पिता थे और इमाम हसन की बेटी जनाब फातिमा आप की माँ थीं। मदीने में पैदा हुये मदीने ही में शहीद हुए।

(८) इमाम जाफ़रे सादिक का नाम जाफर है। बाप इमाम मुहम्मद बाकर थे। माता का नाम उम्मे फरवह है। आप अबवा में पैदा हुए और मदीने में शहीद हुये।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



(९) इमाम मूसा काज़िम का नाम मूसा है। बाप इमाम जाफर सादिक थे और माँ का नाम उम्मेफरदह है। आप अबूवा में पैदा हुए और मदीने में शहीद हुए।

[१०] इमाम अली रज़ा का नाम अली है। आप इमाम मूसा काज़िम के बेटे थे। आपकी माँ का नाम नजमा था। मदीने में पैदा हुये खुरासान में शहीद हुये।

[११] इमाम मुहम्मद तकी का नाम मुहम्मद है। आप के बाप इमाम रजा थे। माँ का नाम सबीका था। मदीने में पैदा हुये और काजमैन में शहीद हुये।

[१२] इमाम अली नकी का नाम अली है। बाप इमाम मुहम्मद तकी और माँ समाना थीं। आप मदीने में पैदा हुये और काजमैन में शहीद हुये।

[१३] इमाम हसन असकरी का नाम हसन है। आप की मां का नाम हदीसा था और बाप हजरत अली नकी हैं। आप मदीने में शहीद हुये।

(१४) इमाम महदी का नाम मुहम्मद है। आप इमाम हसन असकरी के बेटे हैं। माँ का नाम नरजिस खातून है। समर्रह में पैदा हुये और खुदा के आदेशानुसार जिन्दह [जोवित] है।

आप के अलकाब [उपाधि] महदी [मार्गदर्शन] इमामे जमाना वलीये असर (युग के मालिक) हुज्जतुल्लाह [अल्लाह की उक्ति] साहेबुलअस्र [युग के मालिक] आदि है। आपको नाम से नहीं वरन आपके अलकाब से पुकारना चाहिये। नाम लेना जायज [वैध] नहीं है।

प्रश्न

१—दसवें इमाम कहाँ पैदा हुये और आपकी माँ का क्या नाम है ?

२—बारहवें इमाम का नाम लेना कैसे है ? आपको कैसे पुकारा जाये।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# तेरहवाँ पाठ

## इमामत

इमामत भी नुबूवत की तरह उसूले दीन में है न कि फ़ुरुए दीन में। इसलिये कि जो खुदा बन्दो की हिदायत के लिये नबी के बाद नबी भेजता रहा है उस खुदा के लिये आवश्यक है कि नबूवत का अन्त होने के बाद कयामत तक पैदा होने वाले मनुष्यों की हिदायत [मार्गदर्शन] का प्रबन्ध करें। अतएव उसने खातमुलमुरसलीन हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्ललल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के बाद बारह इमामों को मनुष्यों का हादी [मार्ग प्रदर्शक] और रहबर [पथदर्शक] नियुक्त किया है। इन बारह इमामों की इमामत के अन्त पर दुनिया का अन्त हो जायेगा और कयामत [महाप्रलय] आ जायेगी।

इमामत उसूले दीन का मसअला (प्रसंग) है उसको माने बिना न कोई मनुष्य बाईमान (ईमान के साथ) मर सकता है और न मरने के पश्चात् जन्नत में जगह पा सकता है। खुदा वन्दे आलम फरमाता है कि कयामत के दिन हम हर मनुष्य को उसके इमाम के साथ बुलायेंगे।" ज्ञात हुआ कि कयामत के दिन मनुष्यों से केवल यह प्रश्न नहीं होगा कि तुम्हारा खुदा कौन है। तुम्हारा रसूल कौन है। तुम्हारी किताब कौन है। तुम्हारा किब्ला क्या है। तुम्हारा दीन क्या है बरन् सबसे बड़ा प्रश्न यह भी होगा कि तुम्हारा इमाम कौन है। अतः इमाम का जानना और मानना आवश्यक है। हजरत रसूले करीम ने फरमाया है 'जो मनुष्य अपने युग के इमाम को पहचाने बिना मर जायेगा उसकी मौत गुमराह (पथभ्रष्ट) और काफिर को मौत होगी। ज्ञात हुआ कि अपने युग के इमाम को माने बिना कोई मनुष्य मुसलमान की मौत नहीं मर सकता। जब इमाम को मानना इतना आवश्यक है तो

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



खुदा की जिम्मेदारी [उत्तरदायित्व] है कि वह इमाओ का चुनाव करे और नबी के द्वारा उन इमामों के नामों का एलान [घोषणा] करे।

जब कयामत तक खुदा के धर्म और कुरआन का रहना आवश्यक है तो यह भी आवश्यक है कि शरीअत [धर्मविधान] व किताब व सुन्नत के कुछ मुहाफिज [रक्षक] भी कयामत तक रहें।

बारह इमाम इसीलिये नियुक्त किए गये कि वह नबी के दीन धर्म को बाकी रखे।

इमामः—नबी की तरह मासूम होता हैं हर खता गल्ती भूलचूक से पाक होता है।

इमामः—नबी की तरह आलिम [ज्ञानी] पैदा होता है। और वह जीवन में किसी छोटे से छोटे या बड़े से बड़े मसअले [समस्या] के लिये यह नहीं कह सकता कि मुझे ज्ञान नहीं है।

इमामः—नबी की तरह मोजिजे [चमत्कार] की ताकत [शक्ति] का मालिक होता है नबी और इमाम में मोजिजे का जवाब लाना सम्भव नही होता।

इमामः—नबी की तरह अपने युग के तमाम मनुष्यों से हर फज्ल [श्रेष्ठता] व कमाल में अफजल [सर्वश्रेष्ठ] होता है।

इमामः—नबी के समान हर जाति [निजी] खानदानी [कुलीन] जिस्मानी [शारीरिक] रुहानी [आत्मसम्बन्धी] जाहिरी [बाह्म] और बातिनी [आन्तिरिक] ऐब से पाक होता है।

इमामः—नबी के समान कमालात (विशेषताओं) का मजमुआ [संग्रह] होता है।

इमाम—नबी के समान अपने युग का सबसे बड़ा बहादुर मनुष्य होता है।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



इमामः—नबी की तरह दीन और दुनिया का पूर्णतः हाकिम होता है।

इमामः—इमाम हाशमी होता और के अहलेबैत में से होता है।

प्रश्न

१—बताओ इमाम में कौन सी बातें पायी जाती हैं ?

२—इमामत उसूले दीन में है उसकी दलील में एक आयत, एक हदीस बयान करो ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# चौदहवाँ पाठ

## इमाम का होना आवश्यक है

### एक दिल्चस्प मुकालमा

### (एक रोचक वार्तालाप)

इमाम के बिना न संसार बाकी रह सकता है और न मनुष्यों का मार्ग प्रदर्शन हो सकता है। इस सिलसिले में हम एक रोचक वार्तालाप सुनाते हैं।

हिशाम इब्ने हकम जो जनाब इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम के साथी और शागिर्द (शिष्य) थे उन्होंने सुना कि अम्र इब्ने उबेदह बसरह की जामे मसजिद में लोगों के सामने बड़े बड़े गलत और झूटे दावे (याचनाये) करता है। तो एक बार जुमा के दिन उस मस्जिद में जा पहुँचे। क्या देखते हैं कि लोग उसे घेरे हुये हैं और कुछ पूछ रहे हैं। यह भी भोड़ चीरते हुये उसके निकट जा पहुंचे और दोनों में ये बातें होने लगी।

हिशाम:—मैं एक यात्री हूं अगर स्वीकार दें तो मैं भी कुछ पूछूं।

अम्र:—(साहस के साथ) जो पूछना हो पूछ।

हिशाम:—क्या तुम्हारी आखे हैं।

अम्र:—यह भी कोई प्रश्न है। क्या इससे बढ़कर मूर्खता का कोई प्रश्न हो सकता है।

हिशाम:— मुझे तो यही पूछना है बताने में तुम्हारा क्या बिगड़ता है।

अम्र:—अच्छा रुष्ट न हो तुम्हें अगर यही पूछना है तो मै भी उत्तर देता हूं कि आंखे हैं।

हिशाम:—भला तुम इससे क्या काम लेते हो ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



अम्र:—अरे भाई यह भी कोई पूछने की बात है। मैं इस से चीजों को देखता और रंगो का अन्तर पहचानता हूं।

हिशाम:—क्या तुम्हारे नाक भी हैं।

अम्र:—है फिर आप का मतलब।

हिशाम:—मतलब कुछ नहीं केवल यह बता दीजिये कि आप इस से क्या काम लेते हैं।

अम्र:—इससे हर प्रकार की अच्छी बुरी बू ज्ञात होती है इस से सांस लेते हैं।

हिशाम:—क्या जबान भी है?

अम्र:—अच्छा भाई यह प्रश्न भी सही हाँ जीभ भी है।

हिशाम:—क्या इससे कुछ काम लेते हो?

अम्र:—इससे बातें करता हूं। विभिन्न प्रकार की चीजों के मजे (स्वाद) महसूस करता हूं मीठा, कड़वा, नमकीन, फीका, इसीसे ज्ञात होता है।

हिशाम:—क्या तुम्हारे कान भी हैं।

अम्र:—हाँ भाई है।

हिशाम:—क्या यह भी कुछ काम आते हैं या यूँ ही हैं।

अम्र:—क्या खूब! हजरत इन से अच्छी बुरी करीब और दूर की बातें सुनता है।

हिशाम:—होगा भला यह तो बताइये हाथ भी हैं।

अम्र:—वाह वाह हाथ हैं नहीं तो क्या टुंडा हूँ अपना मतलब कहिये।

हिशाम:—इनसे कुछ काम भी चलता है या केवल यूँ ही देखने के है।

अम्र:—सुब्हानल्लाह! अरे भाई इन्हीं से तो सर्दी और गर्मी खुश्की तरी, नरमी, सख्ती, खुर्री और चिकनी चीजे ज्ञात होती हैं।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



फिर इसी प्रकार एक एक अंग के लिये पूछते-पूछते अंत में दिल के लिये प्रश्न किया।

हिशामः—क्या तुम्हारे पास दिल भी है या बिना दिल के पैदा हुये हो।

अम्रः—माशा अल्लाह जब दिल ही न हो तो फिर कैसे काम हो ! दिल ही सारे कामों का उत्तर दायी है।

हिशामः—क्या इससे भी कुछ काम निकलता है।

अम्र—क्या कहना ! अरे भाई यह तो सारे शरीर का सम्राट है और यही शरीर की सारी सल्तनत (साम्राज्य) की देखभाल करता है।

हिशामः—क्या और अंग सब इसके मुहताज [आश्रित] और ताबेए फरमान (आज्ञाकारी) हैं।

अम्रः—हाँ बिना इसके तो कोई काम हो ही नहीं सकता।

हिशामः—जब यह अंग सही सालिम [सुरक्षित] हैं तो फिर दिल पर आश्रित क्यों हैं।

अम्रः—मियाँ साहबजादे जब यह अंग किसी बात में शक [सन्देह] करते हैं तो दिल ही से सलाह और सहायता लेते हैं और दिल जो आदेश देता है उसी का पालन करते हैं।

हिशामः—क्या मनुष्य के शरीर में दिल का होना आवश्यक है कि उसके बिना किसी अंग का किसी चीज का यकीन (विश्वास) नहीं हो सकता।

अम्रः—हां हाँ निः सन्देह ! बिना उसके कुछ नही हो सकता।

हिशामः—ऐ अम्र जब खुदा ने शरीर के थोड़े से अंगों को बिना पथदर्शक और शासक के नहीं छोड़ा है तो फिर कैसे सम्भव है कि पूरी दुनिया के मनुष्यों को बिना इमाम छोड़ दे और उनकी हिदायत का कोई प्रबन्ध न करे !

यह सुन कर अम्र के होश उड़ गये और घबरा कर कहने लगा।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



अम्र:–मियां क्या तुम हिशाम हो ?

हिशाम:–नाम से क्या मतलब (उददेश)।

अम्र:–तुम कहाँ के रहने वाले हो !

हिशाम:–कूफा का निवासी हूँ।

अम्र:–तब तुम अवश्य हिशाम ही हो। यह कह कर जल्दी से उठा और हिशाम को गले लगा लिया और मसनद पर जगह दी और अपने बराबर बिठाया और जब तक हिशाम वहाँ बैठे रहे डर के मारे कुछ न बोला और कोई बात न की।

इस वारतालाप से सिद्ध हुआ कि हर समय एक इमाम का होना आवश्यक है।

प्रश्न

१—हिशाम कौन थे किस के सहाबी थे !

२—उन्होंने अम्र इब्ने उबैदह बसरी को क्यों कैसे लाजवाब किया ?

३—हिशाम को यह ज्ञान कैसे मिला ?

४—हिशाम अम्र को कैसे पहचान गया ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org

# पंदरहवां पाठ

## संसार का अंतिम परिणाम

जिस प्रकार यह ससार पहले न था और बाद में पैदा हो इसी प्रकार एक दिन ऐसा भी आयेगा जब यह संसार न रहेगा और कयामत आ जायेगी। कयामत इस तरह आयेगी कि खुदा की आज्ञा से हज-रत इसराफील एक सूर लेकर पृथ्वी पर आयेंगे। सूर के ऊपर की ओर दो कोने होंगे। एक गोशे का मुख आकाश की ओर होगा और दूसरे का मुख पृथ्वी की ओर होगा। पहले पृथ्वी की ओर वाले कोने में सूर फूंकेंगे। उस समय पृथ्वी वाले सब मर जायेगे इसके बाद दूसरी ओर वाले सूर को फूँकेंगे जिससे सब आकाश वाले मर जायेगे और हजरत इसराफील के अतिरिक्त कोई जीवित न रहेगा। फिर हजरत इसराफील भी खुदा की आज्ञा से मर जायेंगे। इसके पश्चात जब खुदा की इच्छा होगी तो पहले आकाश वालों को फिर पृथ्वी वालों को जीवित किया जायेगा और सब का हिसाब किताब होगा और अपने अपने कर्म के अनुसार लोग जन्नत या जहन्नुम में जायेंगे।

कयामत के चिन्हः—कयामत आने से पूर्व कुछ बाते होगी जिनसे पता चल जायेगा कि कयामत आने वाली है।

१—याजूज माजूजः—यह बड़ी प्रलय मचाते थे और रक्तपात किया करते थे। सिकन्दर जुल्करनैन ने एक दीवार बना दी थी।

जिसके कारण याज़ूज माजूज की आपत्ति से संसार को मुक्ति मिली थी। जब कयामत करीब होगी तो यह दीवार गिर जायेगी और याजूज माजूज निकल आयेगे और बड़ा प्रलय मचायेंगे।

२—कयामत आते समय सूर्य पश्चिम से निकलेगा।

३—कयामत आने के पूर्व पूरे संसार में धुंवां फैल जायेगा।

प्रश्न

१—कयामत कब आयेगी!

२—हजरत इसराफील कौन हैं!

३—कयामत के पूर्व कौन से वाकयात (घटनायें) होगे!

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org

# फकहे-दीन

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# सोलहवाँ पाठ

## नमाज

हमारा कर्तव्य:—अल्लाह ने हमें जीवन दिया। वही हमें रिज्क (जीविका) देता है उसी ने हमे माँ बाप भाई बहन दिये। वही हमें ज्ञान और उन्नति देने वाला है वही दौलत (धन) और इज्जत (आदर) देता है। वही हमारे माल में बरकत देता है। जो कुछ हमें मिलता है उसी से मिलता है।

अल्लाह हमारे माता-पिता से अधिक हमसे प्रेम करने वाला है। हमें भी उस प्रेम करने वाले से प्रेम करना चाहिये। अल्लाह से प्रेम का सबसे अच्छी विधि यह है कि हम अल्लाह को सदैव प्रसन्न रखें। अल्लाह को प्रसन्न रखने का नाम "इबादत" है। इबादत करना हमारा कर्तव्य है।

नमाज:—सबसे बड़ी इबादत नमाज है। इसमें दीन और दुनियां के बहुत से लाभ हैं।

नमाज पढ़ने से हममें समय के पालन की कामना पैदा होती है। नमाज पढ़ने वाले का शरीर साफ और हृदय पवित्र रहता है।

नमाज से ज्ञान, ईमान और धन दौलत में अल्ला बरकत देता है।

नमाज पढ़ने वाले को हर मनुष्य आदर की दृष्टि से देखता है।

नमाज पढ़ने वाले से अल्लाह भी प्रसन्न, रसूल भी प्रसन्न, इमाम भी प्रसन्न, ईमान वाले भी प्रसन्न रहते हैं।

नमाज से मनुष्य की आत्मा में श्रेष्टता पैदा होती है।

नमाज हमें बुरी बातों से रोकती है।

नमाज आखिरत (प्रलोक) में मुक्ति की पूंजी है। जिसकी नमाज कुबूल (स्वीकृत) उसका हर कर्म स्वीकार होगा। जिसकी नमाज कुबूल नहीं उसका कोई कर्म स्वीकार नहीं होगा।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



नमाज से बलायें (विपत्तियां) दूर होती है आदमी की आपत्तियों का अंत हो जाता है।

नमाज को जो मनुष्य छोड़ दे वह फासिक है। उसे अल्लाह कठोर दंड देगा।

नमाज की जो मनुष्य उपेक्षा करे और बेक़ार समझे वह काफिर है। जिसने नमाज को अस्वीकृत किया उसने गोया खुदा को अस्वीकार किया और जिसने खुदा को न माना वह मुसलमान नहीं।

नमाज पढ़ने वाला अल्लाह से डरता है इसलिये वह बुरे कार्यों से दूर रहता है।

नमाज पढ़ने वाला अल्लाह को शुक्र करता है। नमाज से अल्लाह की नेमतें (विधि) मिलती हैं।

नमाज जमाअत के साथ पढ़ने से आपस में एकता और भाई चारा पैदा होता है।

नमाज का एक नियम है और सब इसी नियम के अनुसार नमाज पढ़ते हैं उसमें परिवर्तन नहीं हो सकता। जीवन के दूसरे कार्यों में भी अगर यही सुशीलता और क्रम रखा जाये तो हर कार्य में सफलता निस्सन्देह है।

प्रश्न

१—इबादत किस चीज का नाम है ? और सबसे बड़ी इबादत क्या है।
२— नमाज को बेकार समझने वाले को क्या कहेंगे ?
३—नमाजे जमाअत से क्या लाभ है।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# सत्तरहवां पाठ

## मासूमीन की नमाजें

नबी की नमाजः—हमारे नबी पूरी-पूरी रात नमाज में खड़े रहते थे। आपके पैरों पर वरम आ जाता था। अंत में अल्लाह को कहना पड़ा "ऐ कमली ओढ़ने वाले हबीब (प्रियतम) रात में थोड़ा आराम भी किया करो"

पहले इमाम की नमाजः—हमारे पहले इमाम हजरत अली अलैहिस्सलाम दीन वा दुनिया के सम्राट थे। एक बार आप लड़ाई (युद्ध) के लिये गये। बड़े घमासान का युद्ध हो रहा था। शत्रु आपको चारों ओर से घेरे हुये थे और यह चाहते थे कि आपको मार डालें। इतने में नमाज का समय आ गया। आपने यह भी नहीं सोचा कि शत्रु आपको चारों ओर घेरे हुये हैं बस तुरन्त आप घोड़े से उतरे और नमाज प्रारम्भ कर दी।

जब नमाज पढ़ चुके तो एक सहाबी ने आपसे पूछा "ऐ अली भला इस घोर युद्ध में नमाज पढ़ने का कौन सा अवसर था। आपने उत्तर दिया" हम इसी नमाज को कायम (स्थापित) करने के लिये नमाज पढ़ रहे हैं।

तीसरे इमाम की नमाजः—हमारे तीसरे इमाम हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को हजारों शत्रुओं ने करबला में घेर लिया था आपका बध करना चाहते थे। मुहर्रम की दस तारीख को जब जुहर का समय आ गया तो आपने अपने दो साथियों को सामने खड़ा किया ताकि वह शत्रुओं के हर वार (प्रहार) को अपने ऊपर रोक लें और स्वयं नमाज पढ़ने लगे। आपको न हजारों शत्रुओं का भय हुआ न

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



बरसते तीरों का डर, न मृत्यु की चिन्ता और न घायल होने की शंका। आप ने तीरों की बौछार में नमाज पढ़ी। शत्रुओं ने अस्र के समय आप का बध किया तो आपका सर सजदे में था। आपने सजदे में सर कटा कर हमें बताया कि जान जा सकती है परन्तु बन्दगी नहीं जा सकती।

**चौथे इमाम की नमाज:**—हजरत इमाम जैनुल्आबेदीन अलैहिस्सलाम हमारे चौथे इमाम हैं। आप दिन रात अल्लाह की इबादत किया करते थे। अल्लाह का ऐसा डर तारी होता कि लोग समझते कि इमाम का देहान्त हो गया।

एक बार आप नमाज पढ़ रहे थे। शैतान ने सोचा कि आपकी परिक्षा लें। शैतान सांप बनकर आपके मुसल्ले (जानमाज) पर आया और आपके अंगूठे में काटना प्रारम्भ किया। आप नमाज पढ़ने में ऐसे विलीन हो गये थे कि सांप अंगूठा चबाता रहा और आपको पता भी न चला। इस पर शैतान को बहुत आश्चर्य हुआ नमाज समाप्त होने के पश्चात एक गैबी (अलौकिक) आवाज आयी निःसन्देह आप जैनुल्आबेदीन हैं। यही आपका प्रसिद्ध लकब (उपाधि) है।

**नमाज की शान:**—नमाज में केवल अल्लाह को याद करना चाहिये इधर उधर का कोई विचार हृदय में न आने देना चाहिये। अगर कोई चिन्ता है तो नमाज के पश्चात दुआ [विनती] करना चाहिये वह उसे दूर कर देगा। नमाज में केवल अल्लाह का ध्यान रखना नमाज की प्रतिष्ठा है। दूसरी बातें सोचने के लिये हमारे पास दूसरा समय है। यही कारण है कि सच्चे मुसलमान नमाज में केवल, अल्लाह से लौ लगाते हैं। कोई दूसरा विचार दिल में नहीं आने देते हैं एक युद्ध में हजरत अली अलैहिस्सलाम के पैर में तीन लग गया जिसके निकालते समय आप पीड़ा से तड़प जाते थे। हजरत रसूल खुदा ने फरमाया कि जब अली नमाज पढ़ें तब तीर निकाल लेना। अतएव नमाज के बीच तीर निकाल लिया गया और आप को ज्ञान तक न हुआ।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



अगर हम अपने इमामों के सच्चे मानने वाले हैं तो हमको नमाज कभी न छोड़ना चाहिये और न नमाज के बीच हमारे हृदय में अल्लाह के अतिरिक्त कोई और विचार आना चाहिये।

प्रश्न

१—इबादत का अर्थ बताओ ?
२—नमाज के तीन लाभ बताओ ?
३—किसी इमाम की नमाज की कोई घटना बताओं ?
४—नमाज की शान क्या होना चाहिये ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# अट्ठारवाँ पाठ

## वाजिब नमाजें

इमामे अस्र अलैहिस्सलाम की गैबत के काल में छः प्रकार की नमाज़ें वाजिब हैं।

१—नमाजे पंजगाना अर्थात सुबह, जुहर, अस्र, मगरिब, इशा।

२—नमाजें आयात अर्थात चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण और जलजला (भूकम्प)आदि के समय नमाज।

३—नमाजें मय्यित (मुर्दे की नमाज)

४—नमाजें तवाफे वाजिब

५—नमाजें कजाये वालेदैन (माता पिता की कजा नमाजें)

६—नमाजें इजारह व नजर व अहद आदि।

जुमआ की नमाज की गिनती पंजगाना में होती है। यह जुमआ के दिन जुहर के बदले वाजिबे तखयीरी है।

नमाज की शर्तें—नमाज के पूर्व छः चीजें वाजिब हैं।

१—इज़ालए नजासतः—नजासत दूर करना, पाक कपड़े पहनना।

२—तहारत अर्थात वुजू या गुस्ल या तयम्मुम करना।

३—सत्र-अर्थात पुरुष अपनी अगली पिछली शर्मगाह छिपाये और स्त्री मुह और हथेलियों के अतिरिक्त पूरे शरीर को छुपाये। कोइ देखता हो या न देखता हो।

४—वक्तः—अर्थात हर नमाज को उसके समय से पढ़ना।

५—इबाहते मकानः—अर्थात नमाज का स्थान जायज हो। गस्बी (छीनी हुई) न हो।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



६—इस्तेकबाले किब्ला अर्थात किबले की ओर नमाज पढ़ना।

पुरुषों को रेशमी या सोना मिला हुआ वस्त्र पहन कर नमाज पढ़ना जायज नहीं।

प्रश्न

१—गैबत काल में कितनी नमाजें वाजिब हैं?
२—नमाज के पूर्व जो चीजें वाजिब हैं वह बताओ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# उन्नीसवाँ पाठ

## किबला

किबला वह स्थान है जहां काबा बना है। काबे के समीप के रहने वाले जो सरलता से किबले को ज्ञात कर सकते हैं उन पर वाजबि है कि काबे के सामने खड़े होकर नमाज पढें।

जो काबे से दूर हैं उनको काबे की ओर मुख करके नमाजें पढ़ना चाहिये।

किबले के ज्ञात करने के बहुत सी विधियां हैं। जैसे यह देखें कि इस स्थान के मुसलमानों की मस्जिदे किस दिशा में बनी हुई है या मस्जिद न हो तो यह पता चलायें कि इस स्थान के मुसलमान किस ओर मुख करके नमाज पढ़ते हैं या मुसलमानों की कब्रों (समाधि) को देखें कि वह किस दिशा में बनी हुई हैं। या वह तमाम साधन जिनसे किबले की दिशा की सम्भावना हो सकती है जैसे कुतुब नुमा (ध्रुव दर्शक यंत्र) या स्थानीय निवासियों का बताना जिसके कहने से भ्रम पैदा हो जाये।

जब किबले का पता किसी प्रकार न चले भ्रम भी न हो पाये तो किबले का इस्तेकबाल वाजिब नहीं है और किसी एक ओर नमाज पढ़ लेना काफी (प्रयास) है। यद्यपि अच्छा यही है कि हर नमाज को चारो ओर पढ़े।

### प्रश्न

१—किबला क्या है ?

२—किबले से करीब वाले का क्या हुक्म है ?

३—काबे से दूर रहने वाले का क्या हुक्म है ?

४—जब किबला न ज्ञात हो तो क्या करना चाहिये ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# बीसवाँ पाठ

## लिबास

नमाज पढ़ते हुए पुरुषों को अपने आगे पीछे का छुपाना वाजिब है और स्त्रीयों के लिये पूरे शरीर का छुपाना वाजिब है। यहां तक कि बाल भी छुपे रहे। केवल इतना मुख खुला रह सकता है जो वज़ू में धोया जाता है। और गट्टे तक हाथ और टखनों तक पैर खुले रह सकते है परन्तु तब जब कोई देखने वाला न हो लिबास (वस्त्र) में कुछ शर्तों का होना आवश्यक है।

१—कपड़ा शरीर को छुपा सकता है। नाइलोन या हल्के मलमल का कपड़ा पहनकर स्त्रियों के लिये नमाज पढ़ना जायज नहीं है जब तक की अलग से चादर आदि न ओढ़े चाहे कोई देखने वाला न हो।

२—कपड़ा पवित्र हो। नजिस कपड़े में नमाज जायज नहीं है। हां अगर पाक करना संभव न हो और समय कम हो तो उसी कपड़े में नमाज पढ़ सकता है।

३—मुबाह हो अर्थात वस्त्र अपनी सम्पत्ति हो या मालिक अनुमति हो। अगर बिना खुमुस व जकात दिये हुये किसी धन से वस्त्र खरीदा गया हो या किसी ऐसे मनुष्य के तरके (मृतक सम्पत्ति) से जिस पर खुमुस व जकात वाजिब था कोई कपड़ा खरीदा गया हो तो उसमें नमाज बातिल है।

४—मुरदार (मृतक शव) की खाल न हो। मुरदार से बचने का साधन केवल यह है कि मुसलमान से खरीदा गया हो। मुसलमान के अतिरिक्त किसी और से खरीदे चमड़े में नमाज सही नहीं है जब तक की उसका उचित विधि से जबह होना ज्ञात न हो।

५—हराम गोश्त पशु का कोई अंग न हो इसलिये कि उसके छोटे से अंग के मिलने से भी नमाज बातिल हो जाती है। इसीलिये यह कहा

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



गया है कि नमाज में कपड़े पर कुत्ते या बिल्ली का एक बाल भी पड़ जाये तो नमाज बातिल हो जायेगी।

६—पुरुषों के लिये शुद्ध रेशम के वस्त्र का पहनना हराम है चाहे नमाज में हो या न हो हां अगर उसमें इतना सूत आदि मिला दिया जाये जिससे शुद्ध और खालिस न कहा जाये तो कोई हानि नहीं है।

७—सुनहरे या सोने के तारों से बने हुये वस्त्रों का उपयोग पुरुषों के लिये हराम है। इसी प्रकार पुरुषों के लिये सोने से श्रिंगार और शोभा भी नाजायज है। जैसे सोने की अंगूठी, चैन, चश्में का फ्रेंम, सामने के दांत बटन आदि औरतों के लिये यह सब बातें जायज हैं। सोने का उपयोग नमाज और नमाज के अतिरिक्त दूसरी अवस्था में भी हराम है परन्तु यह भी याद रहे कि सोने में खलिस (विशुद्ध) की कैद (प्रतिबन्ध) नहीं है। अगर मिश्रित भी है तो भी नाजायज है। जब तक कि इसमें तांबा या कोई दूसरी धातु इतनी न मिला दी जाये कि उसे सोना न कहें।

**प्रश्न**

१—नमाज में पुरुष और स्त्री को कितना शरीर छुपाना वाजिब है ?

२—नमाज के वस्त्र की तीन शर्तें बताओ ?

३—नाइलोन के कपड़े में नमाज क्यों नाजायज है ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# इक्कीसवां पाठ

## मकान

मकान से तातपर्य वह स्थान है जहां खड़े होकर मनुष्य नमाज पढ़ता है उस स्थान के लिये पवित्र होने की कोई कैद नहीं है वह नजिस भी हो सकती है। परन्तु इस शर्त के साथ कि उस स्थान की तरी शरीर और कपड़े तक न पहुँच जाये मगर सजदह की जगह का पवित्र होना आवश्यक है।

नमाज के स्थान में कुछ शर्तें पाई जानी आवश्यक है।

१—मुबाह व जायज हो। दूसरे की जमीन पर या उस जमीन पर जिस के कई मालिक हो मालिक और शरीक (सम्मिलित) की अनुमति के बिना नमाज बातिल है। आम मौकूफात (सामान्य धमार्थ) अर्थात मस्जिद आदि में जो पहले स्थान लेले उसे उसके स्थान से हटाया नहीं जा सकता ऐसा करने से नमाज बातिल हो जायेगी। अनुमति के स्पष्ट कथन की आवश्यकता नहीं है अगर मालिक के सहमत होने का विश्वास काफी (प्रयाप्त) है।

२—नमाज में मासूम की कबर के आगे न होना चाहिये वरना पीछे पढ़े या बराबर खड़ा हो आगे होना खिलाफे अदब (शिष्ठता के विपरीत) है हां अगर काफी दूरी हो जाये या बीच में कोई चीज हो तो कोई हानि नहीं है।

३—नमाज के स्थान को ठहरा हुआ होना चाहिये। चलती हुई गाड़ी पर उस समय तक नमाज नाजायज है जबकि अन्तिम समय तक उतर कर या रुकी हुई गाड़ी में नमाज पढ़ना सम्भव रहे।

यूँ तो नमाज के लिये कोई स्थान मुअय्यन (नियत) नहीं है परन्तु मस्जिद को दूसरे स्थानों पर श्रेष्ठता दी गई है चाहे वहां नमाजें जमा-

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



अत हो या न हो। जमाअत का होना अधिक सवाब और बरकत का कारण है।

मस्जिद की महानता यह है कि सामान्य मस्जिदों में एक नमाज पच्चीस नमाजों के समान है और जामें मस्जिद में सौ नमाजों के समान है। मस्जिद के लिये एक रिवायत यह है कि मस्जिद के पड़ोसी की नमाज बिना मस्जिद में पढ़े मकबूल (स्वीकृत) नहीं हो सकती सिवा उसके कि कोई विवशता हो और दूसरी रिवायत यह है कि मस्जिद कयामत के दिन उन नमाजयों से दुहाई देगी जो नमाज पढ़ते थे परन्तु मस्जिद में नहीं आते थे।

**प्रश्न**

१—क्या नजिस स्थान पर नमाज पढ़ सकते हैं ?

२—रेल पर नमाज कैसे पढ़ी जायेगी ?

३—मासूम की कब्र के आगे नमाज पढ़ना कैसा है ?

४—जामा मस्जिद में एक नमाज, का सवाब क्या है ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# बाईसवाँ पाठ

## अज़ान व एकामत

अज़ान व एकामत केवल पन्जगाना नमाजों के लिये मुस्तहिब है। और बहुत ताकीद के साथ मुस्तहिब है। दूसरी नमाजों में अजान व एकामत नाजायज है चाहे वह वाजिब हो या वाजिब न हों।

अजान और एकामत में निम्नलिखित बातों का ध्यान आवश्यक है।

१—नियत अर्थात दोनों के कुरबत की नियत से पढ़े इसलिये की किसी इबादत में बिना कुरबत की नियत के सवाब नहीं मिल सकता।

२—अकल दीवाने की अजान व एकामत का कोई एतेबार [विश्वास] न किया जायेगा ?

३—बुलूग:—नाबालिग की अजान व एकामत बेकार है जब तक वह अच्छे बुरे के समझने की तमीज [विवेक] न रखता हो।

४—जकरियत:—स्त्री की अजान व एकामत पुरुष के लिये बेकार है हां औरत का अजान व एकामत कहना औरतों के लिये प्रयाप्त है।

५—तरतीब:—अर्थात पहले अजान उसके पश्चात एकामत कहना चाहिये।

६—मवालात:—अजान के पश्चात शीघ्र ही एकामत और एकामत के पश्चात तुरन्त नमाज पढ़ना चाहिये। देर होने से अजान व एकामत बेकार हो जाती है।

७—अरबी:—उर्दू या अशुद्ध अर्बी में अज़ान व एकामत सही नहीं है।

८—वक्त [समय] नमाज के समय से पहले नमाज पढ़ना गलत है हां कज़ा नमाज पढ़ सकता है इसलिये कि उसका समय हर समय रहता है। अज़ान के लिये तहारत [पवित्रता] क़ियाम [सीधा खड़ा होना] इस्तेकबाले किबला [किबले की ओर मुख करना] मुस्तहब है परन्तु एकामत में तहारत व कियाम अनिवार्य है। यह शर्त की एकामत कहते कहते कुछ कामतिस्सलाह पर खड़े हो गये फ़ुरादा

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



[अकेली] नमाज में पूर्णतः अवैध है इस प्रकार एकामत का सवाब नही मिल सकता। अजान व एकामत दोनों में रसूले अकरम के जिक्र के बाद अमीरुल मोमेनीन का जिकर होना चाहिये जो अजान का भाग नही है। परन्तु पैगम्बर की आज्ञानुसार मुस्तहब है।

अगर कोई मनुष्य अजान व एकामत दोनों भूल जाये और नमाज प्रारम्भ करदे तो उसके लिये जायज है कि रुकू में पहुंचने से पूर्व नमाज को तोड़ दे और अजान व एकामत कह कर फिर नमाज प्रारम्भ करे परन्तु अगर केवल एकामत भूल गया है तो अल्हदे प्रारम्भ करने के पश्चात नमाज नही तोड़ सकता है हां इससे पूर्व तोड़ सकता है। केवल अजान में भूल जाने से नमाज नहीं तोड़ी जा सकती इसी प्रकार किसी एक के भी जान बूझ कर छोड़ देने पर नमाज का तोड़ देना हराम है।

प्रश्न

१—क्या नाबालिग की अजान व एकामत काफी हैं ?

२—क्या एकामत व नमाज के बीच समय की दूरी जायज है ?

३—अगर नमाज अजान व एकामत भूलकर नमाज प्रारम्भ कर दे तो क्या हुक्म है ?

४—एकामत की कोई दो शर्तें बताओ ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# तेईसवाँ पाठ

## वाजिबाते नमाज

नमाज में गयारह चीजें वाजिब हैं और उन्हीं के मजमुएँ (संग्रह) का नाम नमाज है। नियत, तकबीरतुल एहराम, कियाम, किरअत, जिक्र, रुक, सुजूद, तशहहुद, सलाम तरतीब, मवालात, इनमें से चार वाजिब रुक्न हैं अर्थात इनके भूल जाने से भी नमाज बातिल हो जाती है। तकबीरतुल एहराम कियाम, रुकु, दोनों सजदे इनके अतिरिक्त सब गैरे रुक्न हैं। अर्थात उनके जानबूझ कर छोड़ देने से नमाज बातिल हो जाती है। परन्तु भूलाने से बातिल नहीं होती वरन् उनकी कजा करना पड़ती है।

नियत को सदैव हृदय में होना चाहिये जबान से कहना आवश्यक नहीं है बल्कि नमाजें एहतियात में तो जबान से कहना नमाज को बातिल कर देता है।

तकबीरतुल एहराम:-नियत के पश्चात अल्लाहो अकबर कहना रुकने नमाज है और पूरी नमाज में यही एक तकबीर वाजिब है इसके अतिरिक्त तमाम तकबीरें सुन्नत हैं।

कियाम :—मनुष्य अपनी से शक्ति खड़े होकर नमाज पढ़े और अगर बीमार या कमजोर है तो जितनी देर खड़ा रह सके खड़ा रहे फिर बैठ जायें अगर फिर ताकत आ जाये तो फिर खड़ा हो जाये जो बैठ भी न सके तो वह लेट जाये दाहने या बाये करवटया चित शर्त यह है कि किबले की ओर उसका मुख रहे। कियाम तकबीर, अल्हम्द, सूरह, हर समय वाजिब है परन्तु तकबीर के समय रुक्न है इसी प्रकार रुकू से पहले भी रुक्न है अर्थात रुकु में कियाम से जाना चाहिये यही कियामें मुत्तसिल बरुकु है। इस कियाम के रुक्न होने का परिणाम यह होगा कि अगर

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



कोई हम्द व सूरह के बाद भूले से सजदे के लिये झुक गया और उसे याद आया कि रुकू नहीं किया है तो अब वहीं से रुकू में नहीं जा सकता वरना नमाज बातिल हो जायेगी बल्कि उसे चाहिये कि सीधा खड़ा हो और उसके बाद रुकू में जाये।

किरअत :—तकबीर के बाद पहली दो रकअतों में अल्हम्द और उसके पश्चात कोई एक सूरह पढ़ना वाजिब है। वाजिब सजदों वाले सूरे न पढ़े और इतने लम्बे सूरे न पढ़े कि नमाज का समय निकल जाये। जमाअत की स्थिति में यही दो सूरे मामूम नहीं पढ़ता है वरन् शेष नमाज मामूम स्वयं पढ़ेगा। अन्तिम दो रकआतों में मनुष्य को अधिकार है चाहे सूरए हम्द पढ़े या एक बार सुबहानल्लाहें वलहम्दो लिल्लाहे वला इलाहा इल्लललाहो वल्लाहो अकबर पढ़े तीन बार पढ़ना अच्छा है।

रुकू :—नमाज का एक रुक्न रुकू है मगर इत्तफाकन (अकस्मात) कभी रह जाये या एक से दो हो जाये तो नामज बातिल है। रुकू में इतना झुकना चाहिये की हथेली घुटने तक पहुंच सके घुटने पर हथेली का रखना वाजिब नहीं है रुकू में एक बार सुब्हान राब्बियल अज़ीमें व वहेम्देह, या तीन बार "सुब्हानल्लाह" कहना आवश्यक है। इसके पश्चात इन कलेमात को बार बार दुहराना मुस्तहब है। रुकू समाप्त करने के पश्चात सीधा खड़ा होकर सजदह में जाये इसलिये कि यह कयाम भी वाजिब है। खड़े होने के पश्चात समेंअल्लाहो लेमन हमेदह कहना मुस्तहब है।

सजदह :—यह भी नमाज का एक रुक्न है परन्तु दोनों मिला कर जिसका अर्थ यह है कि दो के चार हो जायें या संयोग से किसी रकअत में एक भी न हो सके तो नमाज बातिल हो जायेगी। सजदह में सात अंगों का पृथवी पर टिकना आवश्यक है माथा दोनों हथेलिया, दोनों घुटने, दोनों पैरों के अंगूठे। सजदह का जिक्र "सुबहान रब्बियल

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



अअला व बेहम्देह" या तीन बार सुब्हानल्लाह है। सजदह मिट्टी पर होगा या जो चीजे पृथवी से उगी होगी उन पर होगा। शर्त यह है कि वह खाने और पहनने में काम न आती हो। करबला की मिट्टी पर सजदह करने का अधिक सवाब है इसलिये कि यह मिट्टी इस्लामी कुरबानियों (बलिदान) को याद दिलाने वाली और मुसलमानों में जोशे अकीदत (श्रद्धा के उल्लास) को उभरने वाली है। यह और बात है कि सजदह का जवाज (वैधता) इसी पवित्र मिट्टी पर निर्भर है बल्कि हर पाक मिट्टी, लकड़ी, पत्ते पर अपने शराएत के साथ सजदह किया जा सकता है।

तशहहुद :—दूसरी रकअत और अन्तिम रकअत में दोनों सजदों के पश्चात तशहहुद वाजिब है जिसकी सूरत यह है "अशहदों अल्लाइलाहा इल्ललल्लाहों वहदहू लाशरीक लहू व अशहदो अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह, अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिनव आले मुहम्मद। अगर कोई मनुष्य तशहहुद भूल जाये और भूलकर खड़ा हो जाये तो तुरन्त बैठ जाये और तशहहुद पढ़े और नमाज के बाद सजदए सही करें।

सलाम :—नमाज के अन्त में एक सलाम वाजिब है चाहे अस्सलामों अलैना व अला एबादिल्ला हिस्सालेहीन या "अस्सलामों अलैकुम व रहमतल्लाहे व बरकातुह" इसके अतिरिक्त "अस्सलामों अलैक अय्युहन्नबीयों व रहमतुल्लाहे व बरकातुह" हर दशा में मुस्तहब है। सलाम नमाज का एक अंग है।

तरतीब :—(क्रम) नमाज का अपने क्रमनुसार पढ़ना चाहिये जैसे नियत करके तकबीर कहे फिर अल्हम्द पढ़े फिर दूसरा सूरह पढ़े फिर रुकू में जाये। रुकू से उठ कर सजदे में जाये एक सजदे से उठकर फिर दूसरा सजदह करे फिर उसी प्रकार दूसरीं रकअत पढ़े। अगर दो हा रकअत पढ़ना है तो सजदह के पश्चात तशहहुद व सलाम पढ़ कर समाप्त करदे वरन् शेष नमाज इसी क्रम से पढ़े।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



मवालात :—नमाज के तमाम कार्य एक साथ होना चाहिये। बीच में इतना अन्तर या ऐसी खामोशी (मौन) न हो जाये कि नमाज का रूप ही बदल जाये।

कुनूत :—यह दूसरी रकअत में रुकू से पूर्व मुस्तहब है इसमें एक सलवात का पढ़ना भी काफी है।

प्रश्न

१—चलती हुई गाड़ी में नमाज जायज है या नहीं ?

२—घर की नमाज और मस्जिदों की नमाज में क्या अन्तर है। और सामान्य मसजिद और जामें मसजिद की नमाज में क्या अन्तर है ?

३—अजान और एकामत में जिन बातों का लिहाज आवश्यक है वह कितनी हैं ?

४—वाजिबाते नमाज कितने हैं ?

५—मवालात किसे कहते हैं ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# चौबीसवाँ पाठ

## मुबतिलाते नमाज

नौ चीजें ऐसी हैं जिनसे नमाज टूट जाती है और उसका दोबारह अदा करना आवश्यक होता है।

१—किसी ऐसे हदस का होना जिससे वुजू टूट जाता है या गुस्ल वाजिब हो जाता है इसलिये कि उन चीजों से तहारत (पवित्रता) समाप्त हो जाती है और तहारत के बिना नमाज नहीं हो सकती।

२—पूरे शरीर को किबले की ओर से मोड़ लेना या केवल मुख का इतना मुड़ जाना जिससे पीछे की चीजें देख सके। रह गया दाहिने बायें थोड़ा सा मुड़ना तो इस से नमाज बातिल नहीं होती।

३—नमाज की अवस्था में ऐसे कार्य करना जिनके करने से नमाज का रुप बाकी नहीं रहता जैसे नाचना, गाना, सीना पिरोना आदि इसके अतिरिक्त हांथों को हिलाना किसी कार्य के लिये झुकना, दो एक कदम आगे पीछे, दाहने बायें हट जाना। भय में सांप बिछू को मार देना बच्चे को गोद में उठा लेना या इसी प्रकार के दूसरे साधारण कार्यों से नमाज, बातिल नहीं होती परन्तु शर्त यह है कि इस समय मौन रहे कोई जिक्र आदि न करे और किबले का ध्यान रखे। बिना आवश्यकता के यह कार्य किसी प्रकार से उचित नहीं है।

४—कलाम :-नमाज में जिक्र और दुआ के अतिरिक्त किसी बामाना (अर्थ वाला) शब्द का उपयोग करना नमाज को बातिल कर देता है दुआ आदि में भी खिताब (सम्बोधन) खुदा से होना चाहिये किसी मनुष्य को सम्बोधित करके दुआ देना नाजायज है। नमाज पढ़ने वाले को सलाम करने में इबतेदा (आरम्भ) न करना चाहिये परन्तु अगर कोई सलाम करले तो तुरन्त सलामुन अलैकुम कह कर उत्तर देना

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



चाहिये अलैकुमुस्सलाम कहना ठीक नहीं है। अगर पूरी जमाअत को सलाम किया जाये तो एक मनुष्य का उत्तर काफी है परन्तु अगर सब जवाब को टाल जायेगे तो गुनाह में भी सब भागीदार होंगे।

भारत के रसमी सलाम "आदब अर्ज" "तस्लीमात" आदि जैसे वाक्यों का उत्तर वाजिब नहीं है बल्कि नमाज की स्थिति में तो इन शब्दों का बोलना भी जायज नहीं है।

५—नमाज मैं आवाज के साथ या इतनी जोर से हसना कि पूरा मुख सूर्ख हो जाये चाहे आवाज न भी निकले नमाज को बातिल कर देता है। हाँ साधारण मुस्कान में कोई आपत्ति नहीं है। हँसी से जब मुख सुर्ख हो जाये तो एहतियात (सावधानी) यह है कि नमाज को पूरा करे और फिर से नमाज पढ़े।

६—गिरया व बुका (रोना धोना) नमाज की स्थिति में सांसारिक कार्यो के लिये रोना नमाज को बातिल कर देता है यहां तक कि अगर खुद से रोना आ गया और मनुष्य उस पर काबू (वश) न पा सका जब भी नमाज बातिल हो जायेगी सय्येदुश्शहदा (इमाम हुसैन) पर खुदा की खुशी की नियत से रोना जायज है।

७ –खाना पोना:– नमाज की स्थिति में किसी भी मात्रा में खाना पीना नाजायज है बल्कि नमाज को बातिल कर देता है हां अगर मुख मे शकर आदि के कुछ रेजे (कण) रह गये हैं और वह पिघल कर अन्दर चले जायें तो इससे नमाज पर कोई असर (प्रभाव) नहीं पड़ता। अगर कोई मनुष्य नमाज में भूले से खाने पीने में मशगूल (व्यस्त) हो जाये तो उसकी नमाज बातिल न होगी परन्तु शर्त यह है किजा नमाज पर लगता हो दस्तर खवान पर नहीं। इस निर्देश से केवल वह मनुष्य मुक्त है जो नमाजें वित्र पढ़ रहा और सुबह के समय उसे रोजह रखना हैं। ऐसे मनुष्य को यह अधिकार है कि नमाज की अवस्था में पानी पीले खाना वह भी नही खा सकता। पानी पीने में भी किब्ले का ध्यान रखना अति आवश्यक है।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



८—तकफीर:-नमाज में हाथ बांधना इस्लाम की शरीअत (धर्म-विधान) के अनुसार नाजायज है।

९—सूरए हम्द के अन्त पर साधारण मुसलमानों के समान आमीन कहना आले मुहम्मद की फिक्ह के अनुसार नाजायज है और नमाज को बातिल कर देती है। हां अगर इत्तेफाकन (अकस्मात) जबान से निकल जाये तो कोई हानि नहीं है।

यह वह स्थान हैं जहां नमाज स्वयं ही बातिल हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त किसी भी अवसर पर बिना आवश्यकता के नमाज तोड़ना जायज नहीं है। हां आवश्यकता के समय ऐसा हो सकता है चाहे वह आवश्यकता सांसारिक हो या धार्मिक। बल्कि कुछ स्थितियों में अगर जान माल या मर्यादा का भय है तो नमाज का तोड़ना वाजिब है परन्तु उत्तम यह है की नमाज तोड़ते समय एक सलाम पढ़े।

चेतावनी-रोजाना की नमाज़ों सुबह, मगरिब और इशा की पहली दो रकअतें आवाज के साथ पढ़ी जायेगी जुहर व अस्र पूरी और मगरिबैन की अन्तिम रकअते बे आवाज पढ़ी जायेगी। परन्तु यह ध्यान रहे की यह बात केवल हम्द व सूरह के लिये है इसके अतिरिक्त पूरी नमाज में मनुष्य को अधिकार है चाहे आवाज के साथ पढ़े या बे आवाज। हम्द व सूरह और दूसरी दुआओं व जिक्र के पढ़ने में अर्बी कवाएद (व्याकरण) का ध्यान रखना आवश्यक है।

प्रश्न

१—नमाज की आवस्था में सांप, बिच्छू का मारना कैसा है नमाज सही रहेगी या बातिल हो जायेगी ?

२—क्या मुस्कुराने से नमाज बातिल हो जायेगी ?

३—नमाज में पानी पीना कैसा है ?

४—तकफीर का क्या अर्थ है ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# पच्चीसवाँ पाठ

## आदाबे जिकर व किरअत

(जिकर व किरअत के नियम)

१—नियत के अवसर पर कुछ लोग कुरबतन इल्ललाह कह देते हैं जब कि यह शब्द एलल्ललाह है।

२—सलवात में आल्लाहुम्म सल्ले सीन से कह दिया जाता है जब कि यह रसूले अकरम के लिये श्राप है असली शब्द स्वले साद से है

३—"अशहदो अन ला इलाहा इल्लललाह" में अन कानन गिरा कर अलिफ (म) को बाद के लाम (ल) से (न) मिलाकर अल्लाइलाह पढ़ना चाहिये।

४—सलवात में मुहम्मदिन्न आले मुहम्मद में वाव (व) पर तशदीद देकर दाल (द) को वाव (व) से मिलाकर पढ़ना चाहिये।

५—कुफुवन अहदमें कुफुवन शब्द को कुफ़वन-कुफ़वन वाव (व) के साथ और कुफुअन-कुफ़अन हमजह (अ) के साथ चार प्रकार से पढ़ सकते हैं। तीसरे तरीके (विधि) से अर्थात कुफ़ुअन पढ़ना उत्तम है।

६—हय्य अलस्सलात और कदकामतिस्सलात में ते (त) को हे (ह) पढ़ना चाहिये इसलिये कि वक्फ़ और ठहराओ में गोल ते (४) हे (४) से बदल जाती है।

७—तशहहुद में "अशहदो अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलहू में अब्दुहू की (द) पर उ की मात्रा होना चाहिये अ की मात्रा गलत है।

८—सूरए अलहम्द में अलमुस्तकीम पर ठहर भी सकते हैं और अलमुसतक़ीमा पढ़कर बाद से मिला भी सकते हैं।

९—इन्ना अनजलना में मिन कुल्ले अमरिन सलाम पर ठहरना भी

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



जायज है और मिन कुल्ले अम्र पर ठहरकर सलामुन को बाद से मिलाना भी ठीक है।

१०—नमाज की स्थिति में जितने भी जिक्र वाजिब या मुस्तहब हैं सबको सुकून व इतमीनान (स्थिरता व संतुष्ट) की स्थिति में अदा करना चाहिये। हरकत व इजतिराब (हिलते डुलते) में बेहौलिल्लाहे व कव्वतेही के अतिरिक्त किसी जिक्र का अदा करना उचित नहीं है।

प्रश्न

१—कितने चीजें ऐसी हैं जिनसे नमाज टूट जाती है।

२—नमाज की स्थिति में "आदाब अर्ज" या "तसलीमात अर्ज" कहा जाये तो नमाज सही होगी।

३—नियत में इल्ललल्लाह उचित है या एलल्लाह ठीक है ?

४—नमाज में वह कौन सी चीज है जिसको हिलते डुलते भी पढ़ सकते हैं ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# छब्बीसवां पाठ

## कज़ा नमाज

अगर किसी मनुष्य से अपनी नमाज छूट गई या बड़े बेटे पर आप की कजा नमाज वाजिब हो गई है तो उसका कर्त्तव्य है कि उन सब की कजा अदा करे। कजा नमाज़ के सब नियम वही हैं जो अदा के हैं अगर सफर की कजा है तो घर में भी कस्र ही अदा की जायेगी इसी प्रकार इसके विपरीत अर्थात अगर घर की कजा है तो सफर में भी पूरी पढ़ी जायेगी। अगर जहरी (आवाज़ से पढ़ने वाली) नमाज है तो जहरी रहेगी इखफाती (बेआवाज के पढ़ने वाली) है तो इखफाती रहेगी फरादा (अकेले) भी हो सकती है और जमाअत से भी। तरतीब (क्रम) को ध्यान में रखना आवश्मक है। जैसे पहले जुहर की फिर अस्र की पहले मगरीब की फिर इशा की। हां यह सम्भव है कि सुबह की कजा नमाज जुहरैन की अदा के बाद पढ़े या जुहरैन की कज़ा नमाज मगरिबैन की अदा के बाद पढ़े। कजा का कोई निर्धारित समय नहीं है हर नमाज की कजा हर समय पढ़ी जा सकती है।

माता पिता की नमाज अगर स्वयं अदा नहीं कर सकता तो मजदूरी देकर पढ़वाये उजरत (मजदूरी) पर पढ़ने वाला मरने वाले की ओर से नियत करके वैसी नमाज पढ़े जैसी नमाज मरने वाले की कजा हुई है परन्तु जेहर व इखफात में अपना 'लिहाज' करेगा अर्थात अगर पुरुष स्त्री की ओर से पढ़ रहा हैं तब भी जिस नमाज में पुरुष सूरे आवाज के साथ पढ़ता है उस नमाज में आवाज से ही पढ़ेगा। बड़े बेटे के अतिरिक्त (कजाए वालेदैन) माता पिता की कज़ा किसी दूसरे पर वाजिब नहीं है। यह और बात है कि बड़ा बेटा नालायक (अयोग्य) हो या न हो तो दूसरी औलाद या सम्बन्धियों का इस फरीजे (कर्त्तव्य) को अदा कर

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



देना चाहिये। औरतों पर हैज व निफास के जमाने में छुट जाने वाली नमाजों की कज़ा वाजिब नही हैं हां इस काल के रोजे की कज़ा वाजिब है।

मुर्दे की ओर से अगर कोई मनुष्य स्वयं नमाज अदा करदे तो वारिस (उत्तराधिकारी) को पढ़ने की आवश्यकता नही है। बीमार आदमी कजाए उमरी (अपनी कजा नमाजों) को बैठ कर नहीं पढ़ सकता बल्कि अपने ठीक होने की प्रतीक्षा करेगा। हां अगर स्वास्थ से निराश हो गया है तो बैठ कर ही अदा करेगा। जुमअतुलविदा (रमजान की अन्तिम जुमआ) के दिन चार रकअत नमाज को पूरे जीवन का कफ्फारह (प्रायश्चित) प्रधिकार दिया गया है इसका कोई आधार नहीं है बल्कि कजा का अदा करना आवश्यक है।

प्रश्न

१—जेहरी नमाजें कौन-कौन है और इसफाती कौन ?

२—बाप की नमाज किस बेटे पर वाजिब है ?

३—उजरत पर नमाज पढ़ने वाले का हुक्म है ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# सत्ताईसवाँ पाठ

## नमाज की त्रुटियां

भूल :—नमाज में गलतियाँ दो प्रकार की होती है भूल और शक (शंका) भूल जाने की सूरत यह है कि मनुष्य नमाज में किसी वाजिब के अदा करने से गाफिल (अबोध) हो जाये। ऐसी सूरत में अगर भूली बात अगले रुक्न के आरम्भ करने से पहले याद आ जाये तो तुरन्त पलट कर उसे पूरा करे और अगर रुक्न के प्रारम्भ करने के पश्चात याद आये जैसे रुकू में जाकर सूरए हम्द या दूसरे सूरे का भूलना याद आये तो ऐसी दशा में जिस चीज को भूला है अगर वह स्वयं रुक्न नहीं है तो नमाज को आगे बढ़ा दे और बाद में हर भूली हुई बात के लिये दो सजदए सही करे और अगर भूली हुई बात स्वयं रुक्न थी तो नमाज बातिल हो गई फिर से पढ़े। अगर पलट कर वाजिब को अदा करने में कोई चीज बढ़ गई हो तो इस ज्यादती (अधिकता) के लिये भी सजदए सहो करेगा। जैसे खड़े हो जाने के बाद याद आये कि तशहहुद नहीं पढ़ा है तो तुरन्त बैठ जाये और तशहहुद पढ़े और नमाज के बाद सजदए सहो करे इसलिये कि खड़े होकर फिर बैठना पड़ा और तशहहुद के बाद फिर खड़ा होना पड़ा इस ज्यादती के लिये सजदए सहो करना पड़ेगा।

सजदए सहो ६ कारणों से वाजिब होता है।

१—भूले से नमाज के बीच में बात कर लेना ऐसे में नमाज बातिल न होगी बल्कि सजदए सहो करना पड़ेगा।

२—बेमहल अर्थात जहां सलाम न पढ़ना चाहिये वहां सलाम पढ़ देना।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



३—चौथी और पांचवी रकअत में शक करना।

४—एक सजदह का भूल जाना। दोनों के भूलने से नमाज बातिल हो जाती है इसलिये कि वह रुक्न है।

५—बेमहल खड़ा हो जाना जैसे कि दूसरी रकअत में तशहहुद पढ़ने के स्थान पर खड़ा हो जाना। ऐसे में बैठ कर तशहहुद पढ़ेगा। और नमाज के बाद सजदए सहो करेगा।

६—स्वयं तशहहुद का भूल जाना और बाद वाली रकअत के रुकू में जाकर याद आना।

सजदए सहो की विधि—नमाज के समाप्त होते ही किब्ले की ओर से मुख मोड़े बिना तुरन्त हृदय में नियत करे कि दो सजदए सहो फला गलती के कारण करता हूं वाजिब कुरबतन एलल्लाह और यह इरादह (संकल्प) करके तुरन्त सजदह में जाये और यहाँ जिकर करे बिस्मिल्लाहे व बिल्लाहे अस्सलामो अलैक अय्युहन्नबीयो व रहमतुल्लाहे व बरकातुह फिर सर उठा कर दूसरा सजदह करे और यही जिक्र पढ़े फिर सर उठा कर तशहहुद व सलाम पढ़े।

अगर नमाज में एक सजदह या तशहहुद भूल गया था तो नमाज के अंत पर पहले इस सजदे या तशहहुद की कजा करे इसके बाद सजदए सहो करे।

शक:—नमाज में शक पैदा होने की दो सूरते हैं। कभी शक का सम्बन्ध नमाज के कार्यो से होता हैं और कभी नमाज की रकअतों से। अफआल (कार्यों) में शक का अर्थ यह है कि नमाज के बाच तकबीर कहने हम्द या सूरह पढ़ने रुकू या सजदह करने आदि में शक हो जाये ऐसी अवस्था का हुक्म यह है कि अगर बाद वाले कार्य में प्रविष्ट के बाद किसी पहले वाले कार्य में शक हुआ है तो उसकी

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



और कोई ध्यान न देगा वरना नमाज सही मानी जायेगी जैसे किसी व्यक्ति को कुल हुवल्लाहो अहद पढ़ते समय सूरए हम्द के पढ़ने में शक हो गया तो पलटने के स्थान पर आगे बढता रहेगा और इन्शा अल्लाह सही रहेगी।

रकआत में शक का अर्थ यह है कि रकअतों की ठीक-ठीक गिनती याद न रहे इस शक की बहुत सी सूरते हैं। परन्तु केवल नौ दशाओं में नमाजें सही हो सकती है इनके अतिरिक्त सब सूरतों में बातिल होगी। इसका नियम यह है कि शक पैदा होते ही ध्यान देकर सही बात याद करने का प्रयत्न करे। अब अगर कोई बात तय न कर सके तो शरीअत के बनाये हुए विधानों का सहारा ले।

इन कवानीन (विधान) की विवरण यह है।

१—दूसरे सजदे के पश्चात यह शक हो कि यह सजदह दूसरी रकअत का था या तीसरी रकअत का। ऐसी अवस्था में तीसरी समझ कर इसी हिसाब से नमाज पूरी करे और एक रकअत नमाजे एहतिया पढ़े इसलिये कि अगर वास्तव में यह दुसरी रकअत थी तो एक ही रकअत की कमी हुई है।

२—तीसरी और चौथी के लिये किसी भी स्थिति में शक हो-ऐसे में चौथी मानकर नमाज पूरी करे और एक रकअत नमाजे एहतियात पढ़े।

३—दूसरे सजदेह के बाद दो और चार में शक हो-ऐसे में चौथी रकअत मानकर नमाज पूरी करे और दो रकअत नमाजे एहतियात पढ़े।

४—दूसरे सजदेह के बाद शक करे कि यह रकअत दूसरी थी या तीसरी या चौथी-ऐसे में चौथी समझे और पहले दो रकअत नमाज़ खड़े होकर पढ़े फिर दो रकअत बैठकर।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



५—सजदह के पश्चात शक हो कि यह रकअत चौथी थी या पांचवी ऐसे में नमाज वहीं पर समाप्त करदे और दो सजदए सह्‌ो करे।

६—कियाम की अवस्था में शक हो कि यह चौथी है या पांचवी ऐसे- में तुरन्त बैठ कर नमाज समाप्त करे और एक रकअत नमाजे एहतियात पढ़े।

७—कियाम में शक हो कि यह तीसरी है या पांचवी—ऐसे में बैठकर नमाज समाप्त कर दे और दो रकअत नमाजे एहतियात पढ़े।

८—कियाम की अवस्था में शक हो कि यह तीसरी है या चौथी या पांचवी-ऐसे में बैठकर नमाज तमाम करदे और दो रकअत खड़े होकर और दो रकअत बैठकर नमाजे एहतियात पढ़े।

९—कियाभ की स्थिति में शक हो कि यह चौथी है या छटी-ऐसे में बैठकर नमाज पूरी करे और दो सजदए सह्‌ो करे।

शक के सम्बन्ध में यह बात अवश्य ध्यान में रखना चाहिये कि यह सारे अहकाम केवल उस नमाज के लिये है जिसमें चार रकअत होती हैं। सेह रकअती नमाज अर्थात मगरिब और दो रकअती नमाज अर्थात सुबह और यात्रा की जुहर व अस्र व इशा का हुक्म यह है कि शक पैदा होते ही गौर करे अगर कोई बात याद आ जाये तो उसके अनुसार नमाज पढ़े वरन् नमाज को उसी स्थान पर तोड़ दे और दोबा-राह प्रारम्भ करे।

नामाजे एहतियातः—इस नमाज की विधि यह है कि अस्ल नमाज के समाप्त करते ही तुरन्त खड़ा हो जाये और नियत करे कि नमाजे एहतियात एक रकअत या दो रकअत पढ़ता हूँ वाजिब कुरबतन एल-ल्लाह इस नियत का जबान से अदा करना नाजायज है। इसके बाद केवल सूरए हम्द और वह भी धीमी आवाज में पढ़कर रुकू और सजदह

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



करें और तशहहुद व सलाम के बाद खड़े होकर दूसरी रकअत भी पहली रकअत की तरह पढ़े और सजदों के बाद तशहहुद व सलाम अदा कर के नमाज समाप्त करदे। नमाजे एहतियात में अल्हम्द के अतिरिक्त दूसरा सूरह या कुनूत नहीं पढ़ा जाता है।

प्रश्न

१—अगर नमाज में किसी वाजिब को अदा करना भूल जाये तो क्या करें ?

२—सजदए सहो कहां कहां वाजिब होता है ?

३—सजदए सहो और नमाजे एहतियात की तरकीब बताओ ?

४—शक की कितनी सूरतों में नमाज सही रहेगी ?

५—नमाजे एहतेयात या सजदए सहो छोड़कर क्या नमाज फिर से पढ़ी जा सकती है ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# अट्ठाईसवां पाठ

## नमाजे जमाअत

नमाजे जमाअत इसलामी एकता और समानता का एक अच्छा नमूना (आदर्श) है। शरीअत ने इस पर बहुत जोर दिया है। जमाअत की एक रकअत नमाज को राहे खुदा में एक लाख दीनार (अबीं रुपया) दान करने से उत्तम है। नमाजे जमाअत केवल वाजिब नमाजों के लिए है। सुन्नती नमाजों में ईदैन की नमाज के अतिरिक्त जमाअत नहीं हो सकती। जमाअत हर वाजिब नमाज में मुस्तहब है। परन्तु जुमा और इमाम अलैहिस्सलाम के जुहूर काल में ईदैन में वाजिब और शायद यही कारण है कि हर जमाअत दो मनुष्यों से हो जाती है एक इमाम और एक मासूम परन्तु इन दोनों नमाजों की जमाअत के लिये पांच आदमी होना आवश्यक है अर्थात एक इमाम और चार मासूम।

नमजे पन्जगाना की जमाअत में मनुष्य को अधिकार है जिस नमाज को चाहे दूसरी नमाज वाले पेश नमाज के पीछे पढ़ सकता है। जैसे सुबह की कजा जुहर की अदा के साथ या जुहर की कजा मगरिबैन की अदा के साथ पढ़ी जा सकती है। परन्तु यह याद रखना चाहिये कि नमाजे ईदैन, नमाजे आयात या नमाजे मय्यित पढ़ने वाले के साथ रोजाना की नमाजे नहीं पड़ी जा सकती और न यह नमाजें यौमिया नमाज पढ़ने वाले के पीछे पढ़ी जा सकती हैं। हां अगर मासूम और इमाम की नमाज एक ही हो तो कोई हानि नहीं है।

इस स्थान पर कुछ बातें ध्यान में रखना आवश्यक है।

१—जमाअत सदैव इमाम के साथ पढ़ी जायेगी किसी मासूम की एकतेदा (अनुसरण) करना जायज नहीं है।

२—इमाम को केवल नियत द्वारा नियुक्त करे नाम व नसब, रिश्ता

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



आदि ज्ञात करने या उँगली से इशारा (संकेत) करने की आवश्यकता नहीं है।

३—नमाज के बीच एक इमाम से दूसरे इमाम की ओर नियत नहीं बदली जा सकती परन्तु अगर पहला वाला मर जाये या बेहोश (अचेत) हो जाये या उसकी नमाज बातिल हो जाये या कस्र होने के कारण समाप्त हो जाये तो तुरन्त दूसरे इमाम की नियत दिल ही दिल में करले अगर कोई दूसरा है वरन् फिर फ़रादा नमाज पढ़े।

४—जमाअत में आवश्यकता के समय बीच में फ़रादा की नियत कर सकते हैं परन्तु अगर किरअत्त के समय ऐसा किया है तो शेष सूरह स्वयं पढ़ कर नमाज तमाम करनी होगी।

५—नमाजें जमाअत में यू तो हर समय सम्मिलित हो सकते हैं परन्तु रकअत उसी समय गिनी जायेगी जब रुकू में अवश्य सम्मिलित हो जाये। इमामे जमाअत के साथ पहली या तीसरी में भी कुनूत व तशहहुद पढ़ सकते हैं इसमें कोई हानि नहीं है।

६—अगर रुकू तक पहुँच जाने के विचार से जमाअत में सम्मिलित हुआ और रुकू में पहुँच कर मालूम हुआ कि इमाम ने सर उठा लिया है तो नमाज बातिल हो जायेगी और फिर से प्रारम्भ करेगा परन्तु अगर रुकू तक नहीं पहुँचा है तो फरादा पढ़ सकता है।

शराएते जमाअत—इमाम और मासूम के बीच कोई ऐसी चीज न हो जिससे इत्तेसाल (मिलाप) समाप्त हो जाये इसलिये कि मामूम का इमाम तक सीधा या दूसरे मोमिनीन द्वारा मिला होना अतिआवश्यक है। इत्तेसाल चाहे सामने से हो या दायें बायें से। दीवार के पीछे खड़े होने वाले लोगों का सिलसिला।

१—अगर दाहिने बायें से इमाम तक पहुंच जाये तो उनकी नमाज सही है वरन् बेकार। अगर मामूम पुरुष के अतिरिक्त स्त्री भी हो तो पुरुष या स्त्री के बीच परदह हो सकता है। और इस नमाज पर कोई

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



प्रभाव न होगा । हायल (बाधक) अगर नमाज पढ़ते में पैदा हो जाये जिसके कारण इमाम तक पहुँचने का सिलसिला टूट जाये जैसे एक से अधिक लोग फुरादा की नियत करले और उसका सिलसिला किसी दूसरी ओर से न मिल सके जैसा की पहली सफ (पंक्ति) में होता है तो ऐसी दशा में फरादा की नियत कर लेना चाहिये और जमाअत से अलग होकर नमाज़ पूरी करना चाहिये हाँ अगर फरादा वाले लोग दूसरी रकअत से फिर सम्मिलित हो जाये तो कोई हानि नहीं है।

२—इमाम के खड़े होने का स्थान मसूम से अच्छा न होना चाहिये। मासूम इमाम से बलन्द हो सकता है चाहे कितनी ही मात्रा में क्यों न ऊँचा हो परन्तु शर्त यह है कि जमाअत का रूप बाकी रहे। अगर इमाम के खड़े होने का स्थान एक बालिश्त से कम ऊंचा है या जगह ढाल है तो इमाम की बलन्दी में कोई हानि नहीं हैं। परन्तु ये ध्यान रहे कि ढाल भी अधिक न हो।

३—इमाम और मामूम की जगह में एक कदम से अधिक दूरी न होना चाहिये बल्कि यही बात आपस में सफो में भी होनी चाहिये। मामूम को इमाम से आगे न होना चाहिये बल्कि जहाँ तक हो सके बराबर भी न हो।

शराएते पेश नमाज—इमामें जमाअत में ईमान व अक्ल और सही-हुन्नस्ल होने के अतिरिक्त निम्नलिखित शर्तें हैं।

१—पुरुषों के लिये इमाम पुरुष हो। औरत केवल स्त्रियों की जमा-अत को नमाज पढ़ा सकती है।

२—इमाम आदिल हो और उसकी अदालत किसी न किसी प्रकार से ज्ञात हों। अज्ञात मनुष्य के पीछे नमाज सही नहीं है। हां अगर मामूमीन के द्वारा विश्वास पैदा हो जाये तो नमाज सही होगी।

३—किरअत (लहजा, जेर व जबर) ठीक हो हां अगर मामूम भी इमाम ही के समान किसी शब्द में अटक जाता है तो दोनों की आपस

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



में जमाअत हो सकती है। जहां इमाम ठीक से अदा न कर सके वहां से फुरादा होकर स्वयं पढ़े।

पेश नमाज का ज्ञान में मामूम से उत्तम होना या उसके समान होना आवश्यक नही है।

४—तयम्मुम करने वाला वुज़ू वाले को, ज़बीरह वाला सही सालिम (स्वस्थ) को, मजबूरन नजिस कपड़े में नमाज पढने वाला पाक कपड़े वाले को नमाज पढ़ा सकता है परन्तु बैठकर पढ़ने वाला खड़े होकर पढ़ने वाले को या लेटने वाला बैठ कर पढ़ने वाले को नहीं पढ़ा सकता।

अगर नमाज के बाद ज्ञात हो कि इमाम सही इमाम न था तो नमाज़ पर कोई प्रभाव न पड़ेगा परन्तु अगर ज़माअत के भरोसे ऐसी कमी हो गई है जो केवल जमाअत में जायज है तो नमाज़ को फिर से पढ़ना चाहिये।

जमाअत के अहकाम—१—इमामे जमाअत अपने मामूमीन की ओर से केवल हम्द व सूरह का उत्तर दायी है और वह भी अगर मामूम पहली या दूसरी रकअत में सम्मिलित हो जाये वरन् शेष जिकरों के साथ उसे स्वयं ही हम्द व सूरह भी पढ़ना होगा। इख़फाती नमाज अर्थात जुहर व अस्र की पहली और दूसरी रकअत में मामूम के लिये किरअत नाजायज़ है। जेहरी नमाज में भी अगर किसी प्रकार आवाज पहुँचती है तो किरअत नाजायज है हां अगर आवाज न पहुँच पाये तो मामूम स्वयं भी हम्द व सूरह पढ़ सकता है।

दूसरी रकअत में सम्मिलित होने वाले को इमाम की तीसरी रकअत में किरअत स्वयं ही करना पड़ेगी। इसी प्रकार तीसरी में सम्मिलित होने वाले को इमाम की चौथी रकअत बल्कि तीसरी में भी अगर कियाम से शरीक हो गया तो किरअत खुदही करना होगी। इसलिये अच्छा है कि रुकू से सम्मिलित हो।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



२—मामूम को किरअत आहिस्ता करना चाहिये चाहे नमाज जेहरी अर्थात मगरिब व इशा व सुबह ही को क्यों न हो जबकी वह अन्तिम रकअतों में सम्मिलित हुआ है बल्कि अगर उस तक इमाम की आवाज पहली दो रकअतों में नहीं पहुँचती है तो भी जब किरअत करे आहिस्ता करे।

३ - नमाज के कार्यों में इमाम की पैरवी वाजिब है परन्तु अक़वाल (जिक्र दुआ आदि) में मामूम को अधिकार है। तकबीरतुलएहराम और सलाम इमाम के बाद ही कहना होगा।

४—एक नमाज को बिना कारण दो बार नहीं पढ़ सकते हैं। यह हो सकता है कि फरादा पढ़ कर फिर उसे जमाअत से पढ़े परन्तु दोबारा नमाज में केवल कुरबत की नियत करेगा।

५—अगर मामूम एक ही है तो इमाम के दाहनी ओर खड़ा हो परन्तु अगर स्त्री है तो पीछे ही खड़ी होगी।

**प्रश्न**

१—जमाअत किन नमाजों में वाजिब है ?
२—क्या नमाजे आयत के साथ नमाजें यौमिया भी पढ़ी जा सकती है ?
३—नमाज के दरमियान नियत बदल सकती है या नहीं ?
४—पेश नमाज के शराएत बयान करो ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# उन्तीसवां पाठ

## नमाजे कस्र

यात्रा में चार रकअती नमाज कस्र हो जाती है अर्थात केवल दो रकअत रह जाती है। सुबह और मगरिब की नमाज में कस्र जायज नहीं है। नमाज के कस्र हो जाने की कुछ शर्तें यह हैं।

१—आरम्भ से चौबीस मील शरअी अर्थात सत्ताईस मील दो फर्लांग चालिस गज (तकरीबन ४३ कि० मी०) जाने का निश्चय हो या आना जाना मिलाकर इतना सफर हो जाये। दूरी का हिसाब आबादी के अन्तिम घर से होगा और अगर किसी मनुष्य का इरादह (संकल्प) इससे कम का हो तो वह कस्र नहीं कर सकता। चाहे थोड़ा थोड़ा करके इससे अधिक क्यों न हो जाये।

कस्र के लिये यह शर्त नहीं है कि मनुष्य अपनी इच्छा से यात्रा कर रहा हो बल्कि अगर किसी मजबूर या बंदी को भी यह ज्ञान हो जाये कि मुझे इतनी दूर तक ले जाया जायेगा तो उसे भी कस्र करना होगा।

२—यात्रा जायज होना चाहिये। हराम यात्रा में कस्र नहीं हो सकता चाहे यात्रा खुद हराम हो जैसे गुलाम का आका के पास से भाग जाना या मुजाहिद (दीन के लिये मासूम की आज्ञा से लड़ने वाला) का युद्ध स्थल से भाग जाना। या सफर का ध्येय हराम हो जैसे कत्ल व लूट चोरी व डाका, ज़िना व शराब खोरी झूटी गवाही या सिनेमा के लिये यात्रा करना इन सब दशाओं में नमाज व रोज़ा कस्र नहीं हो सकता।

३—यात्रा मनुष्य का धन्धा न हो। वह लोग जिनका कारोबार ही यात्रा है जैसे ड्राइवर, मल्लाह (केवट) एजेन्ट आदि इन पर वाजिब है

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



कि अपनी यात्रा में कस्र न करे परन्तु शर्त यह है कि इनकी यात्रा का सम्बन्ध उनके कारोबार से हो।

अगर यही लोग अपने कारोबार से अलग निजी कार्य के लिये यात्रा करेंगे तो यह भी कस्र करेंगे, जैसे इन लोगों का जियारात के लिये यात्रा करना।

४—मनुष्य खाना बदोश न हो। खाना बदोश मनुष्य जब तक अपने जीवन के लिये यात्रा करेगा नमाज पूरी पढ़ेगा परन्तु जब अपने जीवन के अतिरिक्त किसी और कार्य के लिये यात्रा करेगा तो वह भी नमाज कस्र करेगा।

५—यात्री उस स्थान से आगे निकल जाये जहाँ तक नगर का अन्तिम घर दिखाई देता है या अन्तिम घर में होने वाली अज़ान की आवाज सुनाई देती है क्यों कि इस इलाके (क्षेत्र) के अन्दर कस्र नाजायज़ है। वह लोग जो यात्रा के लिये सुबह ही से रोजह तोड़ देते हैं और इसके बाद घर से निकलते हैं वह गलत करते हैं उन्हें उस रोजे का कफ्फारह (प्रायश्चित) देना पड़ेगा। रोज़ा ऊपर बताये क्षेत्र से निकलने के बाद ही टूट सकता है। अगर आबादी काफी ऊँचाई पर है तो उसका हिसाब नहीं होगा बल्कि यात्रा साधारण बस्तियों के हिसाब से कस्र (आधी) व इतमाम (पूरी) का मुआमला तय किया जायेगा।

६—यात्रा के बीच ऐसे स्थान पर न पहुँचे को उसका वतन (स्वदेश) हो या जहां दस दिन रहने का संकल्प हो इसलिये कि ऐसे स्थान पर पहुँचने से कस्र नहीं होता।

वतन—वह स्थान है जहां मनुष्य पैदा हुआ है या जीवन बिताने का निश्चय रहता है। एक मनुष्य के दो वतन भी हो सकते हैं अगर उसका इरादह इन्हीं दो स्थानों पर जीवन बिताने का है पुराना वतन छुट भी सकता है अगर उससे अलग होकर सम्बन्ध तोड़ ले जैसे कुछ मुहाजिर (देश छोड़ने वाले) ऐसा करते हैं।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



अगर किसी मनुष्य ने दस दिन रहने का निश्चय से एक नमाज पूरी पढ़ली और बाद में राय बदल गई तो भी नमाज पूरी ही रहेगी जब तक कि दूसरी यात्रा न प्रारम्भ हो जाये।

अगर किसी मनुष्य ने कस्र की नियत से नमाज प्रारम्भ की और बीच में नियत बदल गई तो तीसरी रकअत के रुकू से पूर्व कस्र करके समाप्त कर दे परन्तु तीसरी रकअत के रुकू में पहुँचने के पश्चात राय बदली तो वह नमाज तोड़ कर फिर से पढ़ेगा।

यात्रा के अहकाम —१–जो मनुष्य जानता ही नहीं है कि नमाज व नियम रोज़ाह कस्र भी होता है वह अगर गलत भी पढ़ देगा तो कोई हानि नहीं है परन्तु जो मनुष्य कस्र व इतमाम को जानता है और उसके चार.पूरी करदे और अगर पूरी के निश्चय से आरम्भ की और राय बदल गई तो नियमों को नहीं जानता उसकी गलतीं माफ न होगी बल्कि उसे कज़ा अदा करना पड़ेगी।

भूल कर कस्र की जगह तमाम और तमाम की जगह कस्र पढ़ने वाले का कर्तव्य है कि अगर समय के अन्दर याद आ जाये तो फिर पढ़ ले समय निकलने के बाद कजा की आवश्यकता नही है।

२—कस्र व तमाम में नमाज अदा करने का समय देखा जायेगा अतः अगर समय आने के पश्चात यात्रा की है और नमाज नहीं पढ़ी है तो कस्र पढ़ेगा और अगर समय के अन्दर यात्रा से घर आ गया है तो पूरी पढ़ेगा।

३—मस्जिदे कूफा में और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के रोजे में जरीहे (समाधि) के पास और पूरे मक्का नगर व मदीना में यात्री को अधिकार है चाहे नमाज पूरी पढ़े या कस्र करे। इन स्थानों के अतिरिक्त किसी और जगह के लिये यह अधिकार नहीं है।

प्रश्न

१—नमाज कितनी दूरी के बाद कस्र होती है ?

२—हद्दे तरएखस का अर्थ बताओ ?

३—किस स्थान पर कस्र और इतमाम दोनों का अधिकार है।

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org

# अख़-लाक़

(नैतिक शास्त्र)

## १–इसलाहे नफ्स

(आत्मसुधार)

## २–इसलाहे मुआशिरह

(समाज सुधार)

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# तीसवां पाठ

## तौफीक

हम अपने जीवन में सुबह शाम यह शब्द बोलते हैं कि फला मनुष्य खुदा ने नेकी को तौफीक दी है और फला को तौफीक नहीं दी है। अगर अल्लह तौफीक देदे तो हम एक मस्जिद बनवा दे इमामबाड़ा बनवा दे एक अस्पताल की स्थापना करदे, दरिया पर एक पुल तैयार करादे परन्तु यह नहीं सोचते क़ी इस तौफीक का अर्थ क्या है।

तौफीक का अर्थ है नेकी के लिये हालात पैदा कर देना और उसके साधन इकट्ठा कर देना। अल्लाह जब किसी बन्दे के किसी कार्य से प्रसन्न होता है तो उसके लिये अधिक से अधिक नेकी करने का सामान कर देता है इसी का नाम "तौफीक" है।

यह शिकायत करना गलत है कि खुदा ने हमें नमाज़ पढ़ने की तौफीक नही दी या रोजह रखने की तौफीक नहीं दी। यह खुदा बन्दे आलम पर बहुत बड़ा बोहतान (झूटा आरोप) है। वह हर बन्दे को हर समय तौफीक देने के लिये तय्यार है। शर्त यह है कि बन्दह अपने को तौफीक पाने के योग्य बनालें गलती पर अड़ा रहने वाला मनुष्य कभी तौफीक के योग्य नहीं होता और अल्लह उससे अपनी तौफीक छीन लेता है उसकी गलतियों की पूरी जिम्मेंदारी (उत्तर दायित्व) उसी के सर होती है खुदा पर कोई आरोप नहीं लगाया जा सकता।

प्रश्न

१—तौफीक क्या है ?

२—तौफीक कब मिलती है ?

३—कुछ लोगों को तौफीक क्यों नहीं मिलती ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# इकतीसवां पाठ

## खलूस

परवरदिगारे आलम ने मनुष्य को पैदा करके अपने कार्यों में आजाद बना दिया है। उसे अधिकार है चाहे नेकी के रास्ते पर चले या बुराई के रास्ते पर परन्तु यह बता दिया है कि अगर नेकी के रास्ते पर चलना है तो खलूस से चलना होगा अपने दिल के सुकन या संसार को दिखाने के लिये नेकी करने से कोई लाभ न होगा।

हमारे मौला और आका हजरत अली अलैहिस्सलाम का किस्सा प्रसिद्ध है कि आप जन्गे खन्दक में जब अपने विरोधी उम्र इब्ने अब्देवुद के सीने पर सवार हो गये तो उसने आपकी ओर थूक दिया। आप उसके सीने से उतर आये और थोड़ी देर के बाद सर काटा तो लोगों ने शिकायत की या अली इतना अच्छा अवसर पाने के बाद आप ने दुश्मन को क्यों छोड़ दिया। अगर वह उठकर भाग जाता तो आप क्या करते ?

आप ने फरमाया उसने मेरा अपमान किया या जो गुस्सा क्रोध दिलाने वाली बात है अब अगर मैं सर काट लेता तो अल्लाह की मरजी (इच्छा) में मेरा क्रोध भी सम्मिलित समझ लिया जाता। इसलिये मैं दुश्मन के सीने से उतर आया कि जो कार्य हो वह केवल अल्लाह के लिये हो उसमें बन्दों की कोई पसन्द या न पसन्द सम्मिलित न हो।

किसी कार्य को इसी ढंग से करने का नाम खुलूस है। अल्लाह कार्य में खुलूस ही को पसन्द करता है। जिसका जितना खुलूस होता है उस कार्यों पर उतना ही सवाब मिलता है वह सैकड़ों रकअत नमाज

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



हज़ारों फकीरों को सहायता नहीं देखता बल्कि दिल के खुलूस को देखता है। खुलूस है तो यह सब सवाब के योग्य हैं और खुलूस नहीं तो सब बेकार है।

प्रश्न

१—खुलूस क्या है ?
२—बिना खुलूस कर्म का क्या परिणाम होता है ?
३—किसी पुरखुलूस कार्य की मिसाल दो ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# बत्तीसवां पाठ

## अच्छा जीवन

हमारे धर्म ने अपने मानने वालों को सब से बड़ी शिक्षा यह दी है कि उन्हें इस संसार में अच्छी और पवित्र जीवन बिताना चाहिये। अच्छा जीवन बिताने के लिये यह आवश्यक है कि जो बातें मनुष्य के जिम्में है उन्हें अदा करे जिन बातों से बचना चाहिये उनके निकट न जाये खुदा के हकों का भी ध्यान रखे और मनुष्यों के हकों का भी।

रसूले करीम ने रिसालत की घोषणा के साथ ही यह बता दिया था कि मैं संसार को नेक किरदार (अच्छा चरित्र) सिखाने के लिये आया हूँ जिसने नेक किरदार नहीं सीखा उसको इसलाम से कुछ नहीं मिला।

इसी चरित्र सुधार के लिये इसलाम ने छोटी बड़ी बुराइयों की सूची बता दी ताकि मनुष्य इन बुराइयों से बचे और अपने जीवन को पवित्र बनाकर बिताये। इन्हीं छोटी बड़ी बुराइयों का नाम गुनाहें सगीरह (छोटी गुनाह) व गुनाहें कबीरह (बड़े गुनाह) हैं। गुनाहे कबीरह वह गुनाह है किस पर जहन्नम् का अजाब रखा गया है। गुनाहें कबीरह में कुछ बातें हैं जिन से बचना हम सब का कर्तव्य है ताकि हम अच्छा जीवन गुज़ार सकें और हमारे कारण से किसी दूसरे बन्द ए खुदा को कोई कष्ट न हो।

(१) किसी को खुदा का शरीक बनाना (२) नाहक कत्ल करना (३) यतीमों का माल खाना (४) जिना करना (५. माता पिता की बात न मानना (६) सूद लेना (७) झूटी कसम खाना (८) खुदा की रहमत से (दया कृपा) से मायूस (निराश) होना (९) शराब पीना (१०) जुआ खेलना (११) बदकारी (अपचार) करना (१२) खुदा के अजाब से निडर हो जाना (१३) गाना बजाना (१४) गीबत करना (१५) झूट बोलना

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



(१६) मुरदार अर्थात बिना जबीहे के मरा जानवर का मांस खाना। (१७) सितार तम्बूरा बाजा आदि में व्यस्त रहना। (१८) रिश्वत लेना (१९) जालिम (अन्यायी) की सहायता करना। (२०) चोरी करना (२१) दूसरों से अच्छा बरताव न करना (२२) पेशाब की नजासत से न बचना (२३) ऐसा कार्य करना जिसके करने वाले के माता पिता को लोग गाली दें। (२४) खुदाई फैसलों (खुदा के निर्णय) पर एतेराज करना (२५) गुरुर व तकब्बर (गर्व व घमन्ड) करना (२६) मोमिन को दुख पहुँचाना (२७) अहलो अयाल (घरवालों-बाल बच्चों) की खबर न लेना (२८) शराब पीने के स्थान पर बैठना (२९) गाली बकना, गन्दी बातें करना (३०) नजिस या हराम चीजे खाना आदि।

प्रश्न

१—गुनाह सगीरह व गुनाहें कबिरह किसे कहते हैं ?

२—कोई दस गुनाहें कबीरह बताओ ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# तेतीसवां पाठ

## जलअशरिह का वाक़िआ

जब अल्लाह ने रसूले खुदा को खुल कर तबलीग (धर्म का प्रचार) करने का आदेश दिया और यह हिदायत (निर्देश) की कि ऐ रसूल सब से पहले अपने करीबी सम्बन्धियों में दीन का प्रचार कीजिये" तो हजरत अली को रसूले खुदा ने अब्दुल मुत्तलिब के परिवार के कुछ पुरुषों के पास यह पैग़ाम (संदेश) लेकर भेजा कि मेरे चचेरे भाई मुहम्मद मुस्तफा ने तुमको दावत (निमंत्रण) में बुलाया है। दूसरे दिन चालीस मनुष्य हजरत के पास आये। आप ने पहले सबको खाना खिलाया और खाने के बाद तकरीर (भाषण) करने के लिये खड़े हुए। परन्तु अबूलहब के भड़काने पर तमाम लोग भाषण सुने बिना चले गये। आप ने हजरत अली को भेजकर दूसरे दिन फिर सबको बुलाया और पहले खाना खिलाया फिर सबके सामने इसलाम को पेश किया और फ़रमाया कि तुम में से कौन मनुष्य हिदायत के कामों में मेरी सहायता करने पर तैयार है। जो मनुष्य मेरी सहायता करेगा वह मेरा भाई वसी, वजीर और खलीफा होगा लोगों पर मेरी ओर से हाकिम होगा।

हजरत अली तुरन्त खड़े हो गये और अपने रसूले खुदा की सहायता का वचन दिया। रसूले खुदा ने फरमाया चूँकि अली (अ० स०) ने मेरी सहायता का वचन दिया है अतः यह मेरे भाई, वसी, वजीर और खलीफा हैं और मेरी ओर से तुम लोगों पर हाकिम हैं। इनके निर्देश को सुनो और इनकी इताअत (अज्ञापालन) करो।

इस वाकिए का नाम "दअवते जल अशीरह" है। इस किस्से से

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



ज्ञान होता है कि रसूले खुदा ने हजरत अली को तबलीग के पूर्व अपना खलीफा नियुक्त कर दिया था और सब लोगों पर आप की इताअत वाजिब करदी थी।

**प्रश्न**

१—जल अशीरह का वाकिआ बताओ ?

२—लोग किसके भड़काने पर तकरीर सुने बिना चले गये थे ?

३—दअवते जल अशीरह में रसूले खुदा ने किसको अपना जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया ?

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



# चौतीसवां पाठ

## गदीरे खुम

पैगम्बरे इसलाम के जीवन के अंतिम दिन है आप अन्तिम हज के लिये मक्का की ओर जा रहे हैं। मुसलमानों में यह खबर फैल चुकी है। संसार के हर कोने से मुसलमान अल्लाह के घर का तवाफ़ करने और हुज़ूर की जियारत के लिये चले आ रहे हैं।

हज का समय आते आते मक्के में हज़ारों मुसलमान जमा (एकत्रित) हो गये और हुज़ूर के साथ हज के आमाल बजा लाये हज करने के बाद हुज़ूर मदीने की ओर चले मुसलमानों के काफिले आप के साथ साथ चले। हर दिल में शोक (उल्लास) है कि जितना समय भी हुज़ूर के साथ बीत जाये अपनी खुशकीसमती (सौभाग्य) है।

चलते चलते काफिला गदीरे खुम के चौराहे पर पहुँच गया जहां से काफिलों के रास्ते अलग अलग हो जाते हैं। मुसलमान अपने अपने रास्ते पर जाना ही चाहते थे कि जिबरईल अमीन (वही लाने वाले फरिश्ते) खुदा का संदेश लेकर पहुँच गये मेरे रसूल उस संदेश को पहुँचा दो जो हम तुमको पहले बता चुके हैं। और अगर यह संदेश तुमने नहीं पहुँचाया तो गोया रिसालत का कोई कार्य ही नहीं किया मेंरे रसूल संदेश के पहुँचाने में घबराना नहीं हम तुम्हारी रक्षा करेगे ?

यह आज्ञा सुनते ही रसूल ने काफिले को रुकने का आदेश दिया। जो मुसलमान आगे बढ़ गये थे वह वापस बुलाये गये जो पीछे रह गये थे उनकी प्रतीक्षा की गई। यहां तक कि सवा लाख कलेमा पढ़ने वाले एकत्रित हो गये। हुज़ूर की आज्ञा से ऊँटों की कठियों का मिम्बर तैय्यार किया गया और आप उस पर तशरीफ ले गये और खुदा की हम्द व

Tanzeemul makatib E_library visit our website www.tanzeemulmakatib.org



सना (प्रशंसा) के बाद मजमे से पूछा मुसलमानों। बताओ क्या मैं तुम्हारा हाकिम नहीं हूँ। सबने मिलकर उत्तर दिया कि हुजूर ही हमारे हाकिम हैं। इसके बाद आप ने हजरत अली को अपने हाथों पर उठाया और फरमाया "याद रखो जिसका मैं हाकिम हूँ उसके अली हाकिम हैं।

इस वाकिए को वाकिअए गदीरे खम कहा जाता है को १८ जिल्हिज्जह सन् दस हिजरी को हुआ। जिसके बाद हुजुर केवल दो महीने दस दिन जीवित रहे और २८ सफर सन् ग्यारह हिजरी को आपका देहान्त हुआ।

प्रश्न

१—गदीरे खुम का वाकिआ बयान करो ?

२—गदीर में किस चीज का मिम्बर बनाया गया था ?

३—हुजूर के इन्तेकाल की तिथि और सन् बताओ ?